सेन्ट्रल मंथन

केवल आंतरिक परिचालन हेतु

खंड 8 • अंक - 3

दिसंबर - 2024

बैंक के 114 वें स्थापना दिवस के अवसर पर बैंक के संस्थापक सर सोराबजी पोचखानावाला जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम वी राव एवं कार्यपालक निदेशक गण श्री विवेक वाही, श्री एम वी मुरली कृष्णा एवं श्री महेन्द्र दोहरे.

महाप्रबंधक सुश्री पॉपी शर्मा एवं अखिल भारतीय हिंदी गीत गायन प्रतियोगिता के निर्णायकों के साथ प्रतिभागीगण तथा अन्य स्टाफ सदस्य.

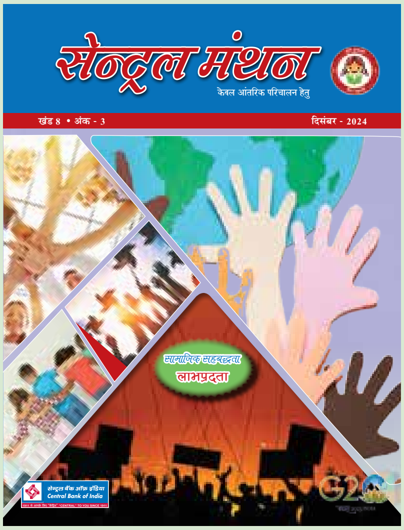

प्रधान संरक्षक
श्री एम. वी. राव
प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

संरक्षक
श्री विवेक वाही
कार्यपालक निदेशक

श्री एम. वी. मुरली कृष्णा
कार्यपालक निदेशक

श्री महेन्द्र दोहरे
कार्यपालक निदेशक

उप संरक्षक
सुश्री पॉपी शर्मा
महाप्रबंधक (मासंवि / राजभाषा)

संपादक
श्री राजीव वार्ष्णेय
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक
श्री हितेन्द्र धूमाल
सुश्री अनिता धुर्वे
श्री सुनील कुमार साव

सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिन्दी गृह-पत्रिका
(केवल आंतरिक परिचालन हेतु)

प्रकाशन तिथि : 20.03, 2025 • खंड 8 • अंक - 3 • दिसंबर, 2024

विषय-सूची

▶ माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव का संदेश 2
▶ माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश 3
▶ माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम.वी.मुरली कृष्णा का संदेश 4
▶ माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेन्द्र दोहरे का संदेश 5
▶ माननीय महाप्रबंधक (राजभाषा) सुश्री पॉपी शर्मा का संदेश 6
▶ संपादकीय 7
▶ आध्यात्म और पर्यटन 8
▶ मेरी गौमुख तपोवन यात्रा 9
▶ मुक्तिबोध 12
▶ सामाजिक सहबद्धता की आवश्यकता 14
▶ डिजिटल भारत में फिनटेक के प्रसार में भारतीय भाषाओं की भूमिका 15
▶ बिहार के गौरव और स्वाभिमान का प्रतीक 'मधुबनी पेंटिग' 18
▶ वो मैं ही था, कोई और नहीं - कविता 20
▶ मीरा बाई और मेड़ता सिटी: प्रेम, भक्ति और साहस की अद्वितीय गाथा 21
▶ तुम मुझको लिखना - कविता.. 23
▶ सफर - कविता.... 23
▶ दुनिया एक है - कविता.. 23
▶ सामाजिक सहबद्धता : एक विस्तृत विश्लेषण 24
▶ ग्राहक संतोष और मूल्य संवर्धन 27
▶ तु नहीं तो कुछ भी नहीं - कविता 30
▶ दिनांक 14 अक्टूबर 2024 को केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां 31
▶ राजभाषा गतिविधियां 34
▶ ए.आई.: एक महान आविष्कार या एक शापित भविष्य? 36
▶ सफलता लक्ष्य नहीं, अपितु पथ है 38

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार अनिवार्यत: बैंक के नहीं हैं.

डिज़ाइन, संपादन तथा प्रकाशन : राजीव वार्ष्णेय, सहायक महाप्रबंधक-राजभाषा, एम.जी.रोड, फोर्ट, मुंबई - 400 023 के लिए तथा उनके द्वारा उचीथ ग्राफिक प्रिंटर्स प्राईवेट लिमिटेड. आइडियल इंडस्ट्रीयल इस्टेट, मथुरादास मिल्स कंपाऊंड, सेनापती बापट मार्ग, लोअर परेल, मुंबई - 400 013.

माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी श्री एम.वी.राव का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम आगामी पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएं.

भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले राष्ट्र की प्रगति के लिए बैंकिंग सेवाओं का आम जनता तक पहुंचना अति महत्वपूर्ण है. एक बैंक के रूप में सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया अपनी स्थापना के समय से ही समाज के हर वर्ग के लिए बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराने में अग्रणी रहा है. इस सामाजिक सहबद्धता का सुखद परिणाम यह रहा है कि सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया का व्यवसाय और लाभ निरंतर बढ़ता गया.

वर्ष 1969 में बैंकों के राष्ट्रीयकरण के पश्चात बैंकिंग क्षेत्र को गति मिली, तो 2014 में प्रधानमंत्री जन धन योजना के साथ बैंकिंग व्यवसाय की प्रगति की गति और तेज हो गई. सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया ने करोड़ों खाते खोलकर अपनी सामाजिक सहबद्धता को सिद्ध करते हुए देश की बैंकिंग सेवाओं से वंचित करोड़ों परिवारों को बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करवा दी. उल्लेखनीय है कि उन करोड़ों परिवारों से भी छोटी-छोटी धनराशि से मिलकर एक बड़ी धनराशि बैंक में जमा हुई.

वित्त वर्ष 2024-25 की अंतिम तिमाही चल रही है. प्रत्येक सेन्ट्रलाइट यह ध्यान रखे कि शाखा में आने वाला हर व्यक्ति महत्वपूर्ण होता है. उस पर पर्याप्त ध्यान दें तथा उसकी पूछताछ एवं समस्या का सही समाधान भी प्रदान करें. हमारे बैंक में हर वर्ग के लिए जमा और ऋण दोनों तरह के उत्पाद उपलब्ध हैं. व्यक्ति की वित्तीय आवश्यकता एवं पात्रता के अनुसार उसे ऋण या जमा उत्पाद प्रदान करें.

प्रत्येक सेन्ट्रलाइट को यह ध्यान रखना चाहिए कि हमारी सामाजिक सहबद्धता हमारे व्यवसाय की प्रगति के लिए अत्यंत उपयोगी तो है ही, साथ ही यह लाभप्रद भी होती है. शाखा परिसर में आने वाले सभी व्यक्तियों को उत्कृष्ट ग्राहक सेवा प्रदान करें. गरिमा पूर्ण व्यवहार करें. शिकायत का अवसर न दें तथा सभी लक्ष्यों को प्राप्त करें.

अंचल प्रमुख एवं क्षेत्रीय प्रमुख कासा जमा में अपनी नेगेटिव शाखाओं की स्थिति को ध्यान में रखते हुए अपने (अंचल/क्षेत्र/शाखा में कार्यरत) कार्मिकों का ध्यान इस ओर केंद्रित करवाकर सघन प्रयास करके इस नेगेटिविटी से बाहर आएं और कासा जमा में प्रगति दर्शाएं.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

(एम. वी. राव)

प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री विवेक वाही का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम नव वर्ष, गणतंत्र दिवस एवं अन्य पर्वों की हार्दिक शुभकामनाएं.

व्यावसायिक बैंकों का राष्ट्रीयकरण 1969 में करने का उद्देश्य समाज के उच्च वर्गों वाली बैंकिंग को सर्व समाज की बैंकिंग करना था. 55 से अधिक वर्षों के पश्चात राष्ट्रीयकृत बैंकों ने इसे सफलतापूर्वक सिद्ध भी किया है. आज बैंकिंग सेवाएं समाज के हर वर्ग के लिए सहज रूप से उपलब्ध है. इसमें 2014 में जन धन योजना के साथ और व्यापक एवं सुखद परिवर्तन हुआ.

वर्तमान में देश के अधिकांश परिवार बैंकिंग से सहबद्ध हो चुके हैं. अगर हम सामाजिक सहबद्धता को लाभप्रदता के साथ देखें तब भी एक सुखद स्थिति प्रतीत होती है. यदि बैंक में खाता है तब गरीब अमीर अपनी हैसियत के अनुरूप बैंक में कम या अधिक जमा राशि रखता ही है और थोड़ी-थोड़ी जमा राशि करके ही एक बड़ी धनराशि बैंकों को मिल जाती है, जो अंततः बैंक द्वारा दिए जाने वाले ऋणों के लिए प्रयुक्त की जाती है.

इसी प्रकार सामाजिक सहबद्धता का ही प्रमाण है कि आज समाज का हर वर्ग से सहबद्ध नागरिक छोटे-बड़े हर कार्य के लिए आवश्यकता होने पर बैंक से ऋण ले रहे हैं जो अंततः बैंक के लिए लाभप्रद होते हैं.

हमारी शाखा में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति से चाहे वह हमारे बैंक का ग्राहक हो या ना हो, सम्मान पूर्वक बात कीजिए और उन्हें जमा अथवा ऋण सभी प्रकार के उत्पादों के विषय में सूचित कीजिए. समाज का हर वर्ग हमारे व्यवसाय के लिए महत्वपूर्ण है. बेहतर ग्राहक सेवा के माध्यम से हमें अपने बैंक के व्यवसाय में वृद्धि करना है जिससे अंततः बैंक को लाभ मिलता है.

सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(विवेक वाही)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री एम.वी.मुरली कृष्णा का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम मैं नववर्ष 2025, गणतंत्र दिवस एवं अन्य पर्वों हेतु अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं.

आज समाज के सभी वर्गों के लिए बैंकिंग एक सामान्य बात है. बैंकिंग समाज के प्रत्येक व्यक्ति के लिए महत्वपूर्ण है, चाहे वह विद्यार्थी हो, कर्मचारी हो, किसान या व्यवसायी अथवा उद्योगपति हो.

हमारा बैंक कम बैंकों वाले एवं बिना बैंकों वाले क्षेत्रों के नागरिकों की सेवा करने के लिए देश के प्रत्येक भाग में पहुंचने के लिए प्रतिबद्ध है. कम बैंकों वाले तथा बिना बैंकों वाले क्षेत्रों तक पहुंचने के लिए बैंक 13 हजार से अधिक बैंकिंग प्रतिनिधि (बीसी) नियुक्त कर चुका है. ये बीसी अपने ग्राहकों के नजदीकी स्थान पर सभी प्रकार की बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करवा सकते हैं. बैंकिंग बीमा, निवेश एवं पेंशन के उद्देश्यों हेतु बैंक आकर्षक दरों पर विभिन्न योजनाएं प्रारंभ कर चुका है. ये बीसी केन्द्र बैंकिंग कार्यकाल के पश्चात, यहां तक की छुट्टियों में भी संचालित होते हैं.

सभी सेन्ट्रलाइटों से अनुरोध है कि वे इन बीसी केन्द्रों को लोकप्रिय बनाएं तथा अपने ग्राहकों से अनुरोध करें कि वे बीसी केन्द्रों के माध्यम से बैंक की सेवाओं का लाभ उठाएं.

लोग अपनी वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए हमारे बैंक से संपर्क करते हैं. वे अपने सपनों को साकार कर सकें इसलिए हम उन्हें ऋण प्रदान करते हैं, क्योंकि हमारे पास सभी प्रकार के टेलर मेड ऋण उत्पाद हैं. शिक्षा ऋण से लेकर व्यवसाय ऋण, कृषि ऋण से लेकर औद्योगिक ऋण तथा वाहन ऋण से लेकर आवास ऋण आदि तक अनेक प्रकार के छोटी राशि से लेकर उच्चतम संभव स्तर तक की राशि के ऋण हम सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया में प्रदान कर रहे हैं. निसंदेह सामाजिक सहबद्धता का परिणाम है कि प्रत्येक जमा एवं ऋण बैंक के लिए लाभदायक है.

अच्छे व्यवसाय एवं लाभ हेतु सर्वोत्तम ग्राहक सेवा प्रदान कीजिए.

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ.

(एम वी मुरली कृष्णा)
कार्यपालक निदेशक

माननीय कार्यपालक निदेशक श्री महेन्द्र दोहरे का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम आगामी पर्वों की हार्दिक बधाई.

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है. समाज में हर व्यक्ति को प्रगति करने और आगे बढ़ने का अधिकार है लेकिन यह भी सच है कि आगे बढ़ने में वित्तीय संसाधन अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. व्यावसायिक बैंके इस दिशा में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं. सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया देश का एक अग्रणी बैंक होने के नाते अपने उद्भव से ही समाज के हर वर्ग के प्रति अपना बैंकिंग उत्तरदायित्व बखूबी पूरा कर रहा है.

बैंक की सामाजिक सहबद्धता जहां एक ओर समाज के सबसे निचले स्तर तक के व्यक्ति के लिए उपयोगी सिद्ध हुई है, वहीं दूसरी ओर बैंकों को भी व्यवसाय के नए अवसर प्राप्त हुए हैं. बैंकों को कम या अधिक किंतु व्यापक व्यवसाय मिल रहा है जो अंतत: लाभप्रद सिद्ध होता है.

बैंकों की सामाजिक सहबद्धता का ही परिणाम है कि पैसे की कमी वाला छात्र शिक्षा ऋण लेकर शिक्षा प्राप्त कर सकता है. इसी प्रकार किसान बैंकों की सहायता से कृषि ऋण लेकर कृषि कार्य कर सकते हैं. आर्थिक रूप से कमजोर उद्यमी व्यक्ति बैंक की सहायता से व्यवसाय कर सकता है. नव प्रवर्तनशील व्यक्ति स्टार्टअप प्रारंभ कर सकते हैं.

शाखाएं केसीसी नवीकरण तत्परता से करें. इसी प्रकार डीएलपी (प्रलेखीकृत ऋण प्रक्रिया) वाले केसीसी नवीकरण पर भी तत्परता से कार्य करें. गोल्ड लोन को बढ़ावा दें. जरूरतमंदों को मुद्रा ऋण योजना के अन्तर्गत ऋण प्रदान करें.

शाखाएं ग्राहकों को सेन्ट ईज के विषय में जानकारी देकर इसके लाभ बताएं और उन्हें इसका उपयोग करने का सुझाव दें.

यह सभी कार्य देश के विकास के लिए महत्वपूर्ण होते हैं. और सोने पर सुहागा यह है कि सामाजिक सहबद्धता बैंकों के लिए भी लाभप्रद है.

सफलता हेतु हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(महेन्द्र दोहरे)
कार्यपालक निदेशक

माननीय महाप्रबंधक (राजभाषा) सुश्री पॉपी शर्मा का संदेश

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

सर्वप्रथम आगामी पर्वों, उत्सवों एवं त्यौहारों हेतु हार्दिक शुभकामनाएं.

व्यावसायिक बैंकें वर्तमान में हमारे समाज का अभिन्न अंग हैं. व्यावसायिक बैंकें समाज में छोटे-बड़े निर्धन-धनवान, अगड़े-पिछड़े, स्त्री-पुरुष, छात्र या व्यवसायी सबके लिए महत्वपूर्ण हैं.

एक बैंकर के रूप में हमारा दायित्व बनता है कि समाज के हर वर्ग के व्यक्ति को सम्मान दें. उनके साथ गरिमा पूर्ण व्यवहार करें, क्योंकि हर एक व्यक्ति हमारे बैंकिंग व्यवसाय के लिए उपयोगी हो सकता है. वह हमारा जमाकर्ता भी हो सकता है या हमारा उधारकर्ता हो सकता है. दोनों ही प्रकार से वह हमें व्यवसाय प्रदान करने वाला हो सकता है.

बैंकों की सामाजिक सहबद्धता ने आज देश के कोने-कोने में बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध करवा दी हैं और करोड़ों भारतीय बैंकों से जुड़कर बैंकों को व्यवसाय प्रदान कर रहे हैं. कहने का आशय यह है कि बैंकों की सामाजिक सहबद्धता बैंकों के लिए हर तरीके से लाभप्रद है.

जैसा कि आप जानते हैं कि वर्तमान तिमाही वित्त वर्ष 2024-25 की अंतिम तिमाही है. इस दौरान बैंक ने आगामी वर्ष हेतु सभी संवर्गों एवं वेतनमानों के लिए पदोन्नति प्रक्रिया संपन्न कर ली है.

आशा है सभी सेन्ट्रलाइट बेहतर ग्राहक सेवा देते हुए अपने लक्ष्यों को बड़े मार्जिन के साथ प्राप्त करेंगे.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित.

(पॉपी शर्मा)
महाप्रबंधक - राजभाषा

संपादकीय

प्रिय सेन्ट्रलाइट साथियो,

आगामी पर्वों की हार्दिक शुभकामनाओं सहित मैं सम्माननीय प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी तथा तीनों माननीय कार्यपालक निदेशकों के कुशल नेतृत्व के प्रति आभार व्यक्त करते हुए हमारे प्रिय बैंक द्वारा वर्ष 2024-25 की दिसंबर तिमाही के दौरान दर्शाए गए उत्कृष्ट कार्य परिणामों के लिए आप सभी को हार्दिक बधाई देता हूं.

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहता है. मनुष्य के जीवन में समाज का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है. सामाजिक प्रतिबद्धता मनुष्य के जीवन का अनिवार्य भाग है. अगर ध्यान से देखा जाए तो एक अकेले व्यक्ति का अस्तित्व समाज से ही पूर्ण होता है. समाज के बिना व्यक्ति अपूर्ण है. प्रत्येक मनुष्य को समाज से सहबद्ध होना ही चाहिए. समाज व्यक्ति के सुख-दु:ख का साथी है. समाज से ही धर्म,रीति-रिवाज, पूजा-पद्धति, जीवन शैली, शिक्षा, ज्ञान आदि होते हैं. व्यक्तियों के समूह से समाज का निर्माण होता है तथा समाज से व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्माण होता है, अर्थात समाज व्यक्ति के लिए एवं व्यक्ति समाज के लिए होता है, और होना भी चाहिए. व्यक्तियों की परस्पर सामाजिक प्रतिबद्धता से ही एक अच्छे समाज का निर्माण होता है.

एक बैंकर होने के नाते हमारा व्यवसाय समाज पर ही निर्भर है. एक व्यवसायिक बैंक का अस्तित्व समाज पर निर्भर है. बैंक का व्यवसाय समाज से होता है. बैंक की छवि निर्माण प्रक्रिया में समाज की महत्वपूर्ण भूमिका होती है. बैंक द्वारा जितनी अच्छी ग्राहक सेवा होगी समाज में बैंक की उतनी अच्छी प्रतिष्ठा होगी, एवं इसके विपरीत भी संभव होता है.

एक बैंक के रूप में हमें लाभ अर्जित करना है. लाभ अर्जित करने के लिए हमें व्यवसाय बढ़ाना है. व्यवसाय बढ़ाने के लिए हमें अच्छी ग्राहक सेवा देनी है. इसे दूसरे शब्दों में कहें तो जितनी अच्छी ग्राहक सेवा दी जाएगी, उतना अच्छा व्यवसाय मिलेगा और अंतत: उतना अधिक लाभ प्राप्त होगा.

हार्दिक शुभकामनाएं.

सादर

(राजीव वार्ष्णेय)
सहायक महाप्रबंधक - राजभाषा

आध्यात्म और पर्यटन

आध्यात्म का सामान्य अर्थ है : स्वयं का अध्ययन, अपनी आत्मा से संबंध अथवा आत्मबोध. जीवन की आपाधापी से थका व्यक्ति जीवन के संध्याकाल में स्वत: ही आध्यात्म की ओर प्रवृत्त होने लगता है. साथ ही, वे प्रकृति-प्रेमी जो प्रकृति की सुंदरता निहारने के लिए घुमंतु बने होते हैं, प्रकृति की शुध्दता और शाश्वत सौंदर्य देखकर उनकी प्रवृत्ति भी आध्यात्म से जुड़ जाती है. एक तीसरा वर्ग भी है जो सामाजिक परंपराओं, अनिष्ट के भय, सांसारिक लालच आदि के कारण आध्यात्म का चोला ओढ़े रहता है. विश्व के प्रत्येक धर्म के अनुयायी आध्यात्म से जुड़ने की भावना से घर के बाहर निकलकर पुण्यार्जन के लिए अपने-अपने इष्ट आराध्यों के दर्शनार्थ तीर्थ क्षेत्रों पर जाते ही हैं. संभवत: यहीं से पर्यटन का प्रारंभ हुआ होगा जो आध्यात्म की ही उपज है.

आज के दौर में पर्यटन का आमतौर पर मान्य अर्थ है मौज-मस्ती के लिए घूमना फिरना. इस क्षेत्र में व्यवसायिकता की घुसपैठ के साथ पर्यटन के प्रकार भी परिभाषित होने लगे. उदाहरणार्थ : शिक्षा पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, खेल पर्यटन, व्यवसाय पर्यटन आदि. हमारे देश में तीर्थ यात्री तब भी तीर्थ यात्री थे और अब भी तीर्थ यात्री ही हैं, भले ही उनका आचरण पर्यटकों जैसा हो.

भारत एक ऐसा देश है जहां पर्यटन के साथ आध्यात्म स्वत: ही जुड़ जाता है. हम देश के किसी भी पर्यटन स्थल पर जाएं, वहां के दृश्यावलोकन (साईट-सीन) में कोई ना कोई मंदिर, गुरुद्वारा, गिरजाघर, मोनेस्ट्री आदि का समावेश होता ही है. शंकराचार्य मंदिर, वैष्णोदेवी , मणिकरण, हेमकुंड साहिब, सेंट फ्रांसिस चर्च, रुमटेक मोनेस्ट्री, देलवाड़ा जैन मंदिर, स्वामी नारायण मंदिर आदि इसके उदाहरण हैं.

विगत कुछ वर्षो के दौरान देश में पर्यटन के विकास ने सराहनीय गति पकड़ी है. टूर ऑपरेटरों की सहज उपलब्धता ने पर्यटन को आसान भी बना दिया है. सुविधाभोगी वर्ग जो अपने सुविधा-आवरण (कंफर्ट जोन) से बाहर नहीं निकलना चाहता, इन टूर ऑपरेटरों पर ही निर्भर होता है और कम ज्ञात किंतु श्रेष्ठता में तनिक भी कम नहीं, स्थलों से वंचित रह जाता है. इनके माध्यम से की गई यात्राएं स्वयं के प्रयासों से रहित व स्थापित स्थलों तक ही सीमित होने से पर्यटक स्थानीय संस्कृति, परंपराओं, खान-पान आदि से जुड़ ही नहीं पाते जो हमें उस कृत्रिम संसार में सीमित कर देता है जहां आध्यात्म से जुड़ाव की संभावनाएं न के बराबर होती हैं.

आज पर्यटन का मुख्य उद्देश्य है अपनी रोजमर्रा की एक जैसी, उकताहट भरी चर्या में परिवर्तन लाकर तरोताजा होने के लिए कहीं बाहर जाना. इसके लिये हम कला, वास्तु, इतिहास और प्रकृति से साक्षात्कार को ही चुनते हैं. हमारे घरेलू पर्यटन में इतिहास, प्रकृति और कला के साथ धर्म-स्थल स्वत: ही जुड़े होते हैं. हम देश के किसी भी पर्यटन स्थल पर जाएं, वहां के दृश्यावलोकन (साईट-सीन) में कोई ना कोई मंदिर, गुरुद्वारा, गिरजाघर, मोनेस्ट्री आदि का समावेश होता ही है. यही विलक्षणता भारतीय पर्यटन को आध्यात्म से जोड़े रखती है. अब तो हमारे यहां लोग तीर्थ क्षेत्रों पर भी पर्यटन-दृष्टि से जाते हैं और अनायास ही आध्यात्म से जुड़ जाते हैं.

शंकराचार्य मंदिर, वैष्णोदेवी , मणिकरण, हेमकुंड साहिब, सेंट फ्रांसिस चर्च, रुमटेक मोनेस्ट्री, देलवाड़ा जैन मंदिर, उत्तराखण्ड के चारों धाम, पुरी, सोमनाथ, रामेश्वरम् , मीनाक्षी मंदिर, होयसला, खजुराहो, स्वामी नारायण मंदिर, त्रिपुरा में उनाकोटि आदि आदि ऐसे स्थल हैं जहां लोग प्राकृतिक सौंदर्य के साथ हमारे इतिहास, विश्वस्तरीय उत्कृष्टतम मूर्तिकला, वास्तुकला आदि को भी जी भरकर निहारते हैं. हम ऐसे स्थलों के लिए भले ही मौज-मस्ती के उद्देश्य के साथ घर से निकलते हों, पर जब हम मंदिरों/ तीर्थों पर जाते हैं तो हमारी आत्मा शुभ भावों में जाती है और हम आध्यात्म से जुड़ ही जाते हैं. ये भले ही अल्पकालिक हो, पर हम एक कदम तो सकारात्मक जीवन की ओर बढ़ा ही लेते हैं.

ऐसे पवित्र स्थलों पर जब कला को निहारते निहारते हम अनायास ही आध्यात्म से एकाकार होने लगते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है जैसे इन पवित्र स्थलों का निर्माण इतनी सूक्ष्म, चित्ताकर्षक कलाकारी के साथ इसीलिए किया गया होगा ताकि लोग कला-दर्शन के लिए आएं और आध्यात्म में डूब जाएं.

खजुराहो और कोणार्क के मंदिर समूह मनुष्य जीवन के चार प्रमुख अंगों : "धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को ही समर्पित" हैं. इनके निर्माण दशाब्दियों तक सतत चलते रहे जिससे असंख्य लोगों को अनवरत रोजगार मिलता रहा और कला भी पोषित हुई. इन मंदिरों की दीवारों पर उत्कीर्ण प्रणय दृश्य संसार को चलायमान रखने, आगे बढ़ाने का संदेश देते हैं. बाहरी संसार के दायित्व निभाते हुए मंदिर में प्रवेश आध्यात्म से जोड़ता है जो कि मोक्षमार्ग है.

मान्यता है कि मंदिरों में देव, यक्ष, अर्ध नर या अर्ध पशु-पक्षियों, आदि की प्रतिमाओं को देखकर देवतागण, गंधर्व, यक्ष, किन्नर, तिर्यंच और मनुष्य संतुष्ट होते हैं. प्रणय दृश्यों से प्रेतात्माएं संतुष्ट होती हैं. इस प्रकार ये कलात्मक मंदिर जो पर्यटन के विश्व विख्यात आकर्षण हैं, हर श्रेणी के जीवों को पहले सांसारिक रुप संतुष्ट करने और फिर आध्यात्म की ओर प्रवृत्त करने के महान उद्देश्य के साथ निर्मित किये गए थे. इनमें अश्लीलता देखने वालों को अपनी दृष्टि बदलने की आवश्यकता है.

यदि हमें पर्यटन के साथ आध्यात्म से भी जुड़ना है, तो पर्यटन को देशाटन में बदलना होगा. पर्यटन में हम सिर्फ बस/ट्रेन/विमान/टैक्सी, होटल, रेस्टोरेंट, गाईड, टिकट खिड़की, इमारतों, बाग-बगीचों आदि से ही जुड़ पाते हैं. सिर्फ इमारतों की निर्जीव यादें, झरनों की अठखेलियों, पहाड़ों में की उछलकूद आदि की अस्थायी स्मृतियां ही साथ ला पाते हैं. इसके विपरीत जब हमारा उद्देश्य देश को जमीनी स्तर पर जानना भी होता है, तो हम स्थानीय लोगों से भी मिलते हैं, वहां की परंपराओं को देखते हैं, रीति-रिवाजों से भी परिचित होते हैं. गुमटियों पर चाय पीना, छोटे ढाबों में भोजन करना, स्थानीय लोगों से बतियाना, स्थानीय छोटे शिल्पियों से खरीदी करना आदि हमें जमीन से जोड़ता है. और यह निर्विवाद सत्य है कि जमीन से जुड़ा व्यक्ति ही आध्यात्म से जुड़ पाता है.

श्री शरद कटारिया
प्रबंधक (सेवानिवृत्त)
क्षेत्रीय कार्यालय, इंदौर

मेरी गौमुख तपोवन यात्रा

कभी - कभी जीवन मे कुछ छोटी सी दबी सी इच्छा कुछ मजेदार करवा देती है.मैं बात कर रहा हूँ माँ गँगा के उद्गम स्थल गौमुख को देखने की हमारी उत्कण्ठा को कैसे गँगा माँ हमारे पूरे देश में विचरण कर रही हैं, तो उनका उद्गम कैसे और कहाँ से हुआ. तो बातों ही बातों में हमारा प्लान बन जाता है कि हम इस बार की गर्मी की छुट्टियों में गौमुख हो कर के आयें अब बात आती है कि जाना कैसे है तो पिक्चर में आते हैं हमारे साले साहब जो कि बहुत सारे पर्वतों की यात्रा कर चुके हैं तो उनसे पता चलता है कि इंडिया हाईक नाम की संस्था इस तरह की पहाड़ों में ट्रैकिंग कराने में सबसे ज्यादा निपुण है.

तो हम इंटरनेट पर पता करते हैं कि ये कम्पनी गौमुख तपोवन की यात्रा करवाती है हमें मोटा मोटा ये पता चला की गौमुख तक तो यात्रा आसान है पर तपोवन थोड़ी मुश्किल है. पर जब हम जोश में होते हैं तो कुछ भी मुश्किल नहीं लगता है हालाँकि हमारा ये जोश कैसे ठंडा पड़ा और सर मुड़ाते ओले पड़ना किसे कहते हैं. इस पर हम आगे बात करते हैं. तो हमने बुकिंग करवा दी हमारे घर के चार वयस्क सदस्यों को एक तो पहली बार पता चला की इंडिया हाईक की शर्त है कि आपको 5 किलोमीटर की दौड़ 32 मिनट में पूरी करनी है और उसका डाटा उन्हें चाहिये उसके बाद ही वो जाने की स्वीकृती देंगे. तो यहाँ से शुरू होती है हमारी पहली मुसीबत हालाँकि मैं थोड़ी रनिंग करता था पर ये स्पीड और पेस थोड़ा मुश्किल था. पर कहते हैं कि जोश हो तो आप सब कुछ कर सकते हैं, तो हमने भी गिरते पड़ते ये टार्गेट भी कर लिया.

तो मई का महीना आता है और हम पूरे जोश में देहरादून पहुँचते हैं और शुरू होता है हमारा रोमांचक सफर यानि की हमारी सात घंटे की यात्रा देहरादून से गंगोत्री की शुरू होती है जो की बहुत ही बेहतरीन यात्रा है क्योंकि पूरी यात्रा के दौरान माँ गँगा आपके साथ बगल में चलती रहती हैं और एक कल कल की ध्वनि पूरे रास्ते चलती रहती है. हाँ मैं ये सोंच कर उन बेहतरीन यादों में खो गया हूँ और ईश्वर का धन्यवाद करता हूँ कि उनकी कृपा से मुझे ये मौका मिला.

फाइनली हम पहुंचे हैं अपने पहले कैंप पर जो कि गंगोत्री में होता है. हमें रात में ही पता चलता है सामान ले जाने के लिए पोर्टर की सुविधा उपलब्ध है, पोर्टर पहाड़ी लोग होते है जो कि सामान ले कर के चलते हैं. यहाँ में इनके जज्बे को सलाम करता हूँ कि इनकी वजह से हम ये यात्रा कर पाए तो मैं और मेरी श्रीमती जी दोनों ही हाथ उठा देते हैं कि हम पोर्टर की सुविधा लेना चाहते हैं क्योंकि बस ने जहाँ उतारा था वहां से होटल तक अपना सामान खुद ले कर के आने के बाद हमें पता चल गया था कि हम कितने पानी में हैं. हम 10300 फीट की ऊंचाई पर थे.

हाँ तो अगला दिन शुरू होता है. हम पूरे जोश में हैं और हमारा पहला स्टॉपेज होता है चीरवासा. इसका नाम चीड़ के पेड़ों की वजह से पड़ा है जो कि लगभग गंगोत्री से 6 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, जिसकी ऊंचाई 11680 फ़ीट पर है. सुबह- सुबह नाश्ता करने के बाद जो कि बहुत ही जोश भरने वाला होता है. और हम निकलते हैं तो चारो तरफ का दृश्य देख कर एक अलग ही दुनिया में पहुँच जाते हैं क्योंकि पूरे रास्ते में माँ गंगा कल कल कर अपने ही उल्मुक अंदाज में बह रही है. वैसे ही जैसे कोई किशोरी अपनी ही मस्ती में रहती है जिसे कहते हैं पूर्ण आध्यात्मिक अनुभव लगता है. प्रभु अगर कहीं हैं तो यहीं हैं. हाँ यहाँ मैं ये बात जरूर कन्फर्म करना चाहूँगा कि अगर आपका लक्ष्य प्रभु को पाना है तो हिमालय पर्वत श्रंखला से बेहतर कोई जगह नहीं है. सबसे महत्पूर्ण बात गंगोत्री के बाद सारे ही मोबाइल कनेक्शंस खत्म हो जाते हैं यानी कि अगले कुछ दिन आप इस दुनिया से अपने आप कट जाते हो.

इस यात्रा की महत्पूर्ण बात ये है कि आप पहाड़ों के कोने- कोने में एक पगडण्डी में चलते हो जो कि लगभग छह फुट की होगी ,

जिसमे एक तरह पहाड़ तो दूसरी तरफ खाई है जहाँ नीचे माँ गँगा आपके साथ पूरे रास्ते चलती रहती हैं. यानी कि आपको हर पल अलर्ट मोड में रहना होता है. यानी कि थोड़ा भी डिस्बैलेंस हुए तो सीधे आपका ऊपर का टिकट कट जायेगा पर डरिएगा नहीं. यही इसका रोमांच भी है कि आप पूरी तरह उस पल में होते हैं. बीच बीच में छोटे छोटे झरने आते हैं जिनसे हमने पानी सीधे चुल्लू से भर के आचमन किया और इस जल का स्वाद का व्याख्यान करना शब्दों में मुश्किल है.

हाँ अपने गाइड के बारे में तो बताना भूल ही गया. ये हैं वीरू पाजी जो कि वहां के लोकल हैं. उनके साथ हमारे टीम लीडर नित्यम और एक सब गाइड भी मौजूद रहते हैं और हमारे ग्रुप में लगभग 25 लोग शामिल थे जो कि देश के कोने - कोने से आये थे. उनमे एक विदेशी महिला भी थी जो की शायद जर्मनी से आयी थी. तो पहले दिन हमारा गंगोत्री से चीरवासा का सफर लम्बा था पर मजा बहुत आया और फिर चीरवासा में हमने अपने तम्बू गाड़ने शुरू किये जहाँ हमें पहली बार हांड मांस कपा देने वाली ठंड में टेंट में सोने का आनंद मिला. ये एक बेहतरीन अनुभव था.रात में हमने जल्द ही भोजन ग्रहण किया जो की बहुत ही सात्विक और अच्छा था. फिर सुबह उठकर 5 बजे सूर्योदय का दर्शन किया और पाया की पानी जम चुका था. सबसे पहले ब्लैक टी मिलती थी. फिर सात बजे नार्मल टी मिलती थी. 8 बजे नास्ता, फिर हमारा वार्म अप होता था और फिर निकल पड़े थे हम अपने अगले पड़ाव की ओर जो कि भोजवासा था.इस जगह का नाम भोजपत्र के वृक्ष के बहुतायात होने की वजह से पड़ा था और एक जगह मैंने एक भोज वृक्ष की छाल रख भी ली थी और हम राजा महाराजाओं की दुनिया में पहुँच गए थे. तो कुल मिला के पहले दो दिनों का अनुभव बहुत ही बेहतरीन था और फाइनली हम पहुँच गए भोजवासा (12400 फ़ीट). हाँ एक बेहतरीन चीज जो मैंने सीखी थी अभी तक यह थी कि हमारे गाइड हमें बताते थे कि आगे ट्रिकी सेक्शन है जहाँ भी कुछ कठिन होता है. अगर कोई कहे कि मैंने कुछ सीखा इस यात्रा से तो ये ''ट्रिकी सेक्शन'' का कांसेप्ट यानी कि जब भी मैं किसी मुश्किल दौर से गुजरता हूँ मैं समझ जाता हूँ ये लाइफ का ट्रिकी सेक्शन है और आप विश्वास मानिये अगर हम जीवन को ऐसे जियेंगे की कुछ मुश्किल आये तो ये लाइफ का ''ट्रिकी सेक्शन'' है आप बहुत ही अच्छी तरह से उससे निकल जायेंगे.इस दिन एक ट्रिकी सेक्शन भी था इसमें दो पहाड़ों के बीच में एक यू शेप पहाड़ी से गुजरना था और यहाँ पर ये रिस्क था कि पहाड़ों में ऊपर बकरी जैसे पशु घास चरने जाते हैं और थोड़ी भी आवाजों में वो गतिविधि शुरू कर देते है जिससे ऊपर से पत्थर गिरना शुरू हो जाते हैं. तो हमारे गाइड साहब यानी कि वीरू पाजी पहले मुआयना करते हैं. फिर पूरी टीम आगे बढ़ती है. वो कहते हैं रिस्क है तो इश्क है.इस यात्रा में आपको हमेशा लगता रहेगा जैसे एक जगह झरने का पानी पूरे रास्ते को भर दिया. यहाँ हमारे वीरू पाजी का अनुभव काम आया उन्होंने कुछ पत्थर बीच में डाल के रास्ता बना दिया.

भोजवासा तक तो बहुत ही मजे के साथ हम पहुँच गए और अब शाम को हमारे गाइड और टीम लीडर एक नए रूप में मिलते हैं और बताते हैं कि यहाँ के बाद की यात्रा बहुत ही कठिन होने वाली यानी कि तपोवन में आपको सीधी चढ़ाई चढ़नी पड़ेगी और सबसे बड़ी मुसीबत की वहां हवा चलती है तो ऊपर से पत्थर गिरने लगते हैं और हर पत्थर बहुत ही स्पीड से आप की तरफ आता है बिलकुल गोली की तरह और लगने के कारण आप को बहुत नुकसान हो सकता है और बीच में वापसी का विकल्प नहीं तो जो आगे नहीं बढ़ना चाहते वो आज यहीं पर रुक सकते हैं. और यहाँ पर मेरी हवा खिसक गयी की भाई सीधी चढाई कैसे चढ़ेंगे क्या करूँ जाऊं की नहीं जाऊँ मुझे उस दिन अपने सारे भगवान याद आ गए और पूरी रात मैं ये सोचता रहा की क्या करा जाये? फिर मैंने ये सोचा की अगर नहीं गए तो पूरे जीवन हम दोबारा तो नहीं आ पाएंगे और मैंने एक फैसला किया अपने समूह की एक कमजोर सदस्य जो कि एक महिला थी जो कि सबसे पीछे चलती थी पूरी यात्रा में अभी तक और हमेशा थोड़ा सहमी रहती थी तो मैंने मन ही मन फैसला किया की भाई अगर ये गई तो मैं भी जरूर जाऊँगा. यानी कि अपना तो भाई सॉलिड स्टॉप लॉस लगा लिया कि अगर ये गई तो मै ये रिस्क ले लूँगा और इन्होंने मना किया तो अपन भी नहीं जाएँगे. खैर प्रभु की इच्छा की उन्होंने मना नहीं किया और मैंने भी सोचा ज्यादा से ज्यादा क्या होगा बहुत दिक्कत लगी तो बीच में ही वापस हो लूँगा और अपना ध्यान इन महान आत्मा पर लगा कर रखूँगा की अगर ये कर सकती हे तो मैं तो कर ही लूँगा.तो यहाँ पर मेरी दूसरी सीख यह कि अगर आपको डर लगे तो ये देखिये की आप से कमजोर लोग क्या कर रहें हैं.

अंत में यहीं पर हमने गौमुख के दर्शन भी किये जो की माँ गंगा का उद्गम स्थली है यात्रा में एक रोमांचक अनुभव ये भी आता है कि हमे माँ गँगा को पार करना है. बहुत ही तेज बहाव के बीच से तो इसके लिए एक रस्सी दोनों छोरों पर टीम के द्वारा पकड़ ली जाती है इसमें सबसे बड़ी समस्या यह थी कि पानी बिलकुल बर्फ़ की तरह ठंडा और आपका पैर सुन्न हो रहा था केवल एक ही चीज थी की आपको रस्सी को पकडे रहना था. अगर रस्सी छूटी तो आपको काफी चोट लग सकती थी. खैर ये पड़ाव पार करने के

बाद आता है हमारा अंतिम लक्ष्य जो की लगभग 500 मीटर की सीधी चढ़ाई और हाँ पूरे रास्ते गाइड साहब हमें ये बताते रहे कठिन अभी बाकी है जबकि सभी कुछ कठिन था क्योंकि हर जगह ये रिस्क था की हवा चलेगी और पत्थर गिरना लुढ़कना शुरू होंगे. तो आपको अपने दायीं ओर ऊपर की ओर देखना है और कहीं पर ऐसा दिखे तो "रॉकफाल रॉकफाल" चिल्ला कर सबको अलर्ट करना है ताकि पूरी टीम अलर्ट हो सके. यहाँ पर हमें टीम भावना का महत्व बहुत अच्छे से समझ में आया था.

खैर आखिर सीधी चढाई आ गयी और मैंने समझ लिया था भाई इसको तो चढ़ना ही पड़ेगा अब वापसी का कोई विकल्प नहीं था मुझे मेरे गाइड वीरू पाजी की एक बात अच्छे से समझ में आ गयी थी. हमेशा छोटे कदम उठाओ और ये ध्यान रखो की तुम कितना चढ़ चुके हो, तो इस बात को ध्यान करते हुए मैंने सोंचा की अब इतना ही तो करना है. धीरे धीरे चलेंगे और कैसे भी कर के कर लिया जायेगा. कहीं दिक्कत लगेगी तो आराम कर के पीछे वाले लोगों को पका कर के अब चढ़ तो जायेंगे ही और थोड़ा आत्म विश्वास तो आ ही गया था कि इतना कर ही चुके हैं. अब थोडा सा ही रह गया है. खैर हम अंत में पहुँच गए तपोवन और सामने क्या देखते हैं. साक्षात् भगवान शिव की तपोस्थली तपोवन हमें सामने बर्फ से ढके हुए "माउंट शिवलिंग" के दर्शन होते हैं. उस अद्भुद नज़ारे को देख कर पहाड़ चढ़ने की सारी कठनाईयाँ विस्मिरत हो गई, मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता कि मैंने ऐसी दिव्यता अपने जीवन में कभी नहीं देखी थी. सामने माउंट शिवलिंग दिख रहें हैं और पूरी जगह की एक अलग सी आभा और हम सभी थोड़ी देर तो उस स्थान को निहारते रहे और अपने पास शिव का अनुभव करते रहे उस स्थान पर एक पतली सी धारा आ रही थी जिसे आकाश गंगा कहते हैं. कल कल करती ये शांत सी नदी ऐसी लगती है जैसे माँ गंगा शिव् की जटाओं से निकल कर आ रही हो.अंत में हमने वहां टेंट लगाये पूरी एक रात इस दिव्य जगह का आनंद लिया और ये भी बताना चाहूँगा इस तपोवन में कई तपस्वी साधना करते रहे हैं और कुछ उस समय भी कर रहे थे. मैं तो ईश्वर का धन्यवाद कर रहा था कि उसने मुझे वो शक्ति दी कि मैं यहाँ उनकी गोद में शरण पा सका कहने को तो बहुत कुछ है पर इसी के साथ मैं अपनी यात्रा के संस्मरण को विराम देता हूँ आशा करता हूँ. आप ने भी मेरे साथ ये यात्रा के अनुभव का आनंद लिया होगा.

अमित मिश्रा
वरिष्ठ प्रबंधक
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया, ठाणे

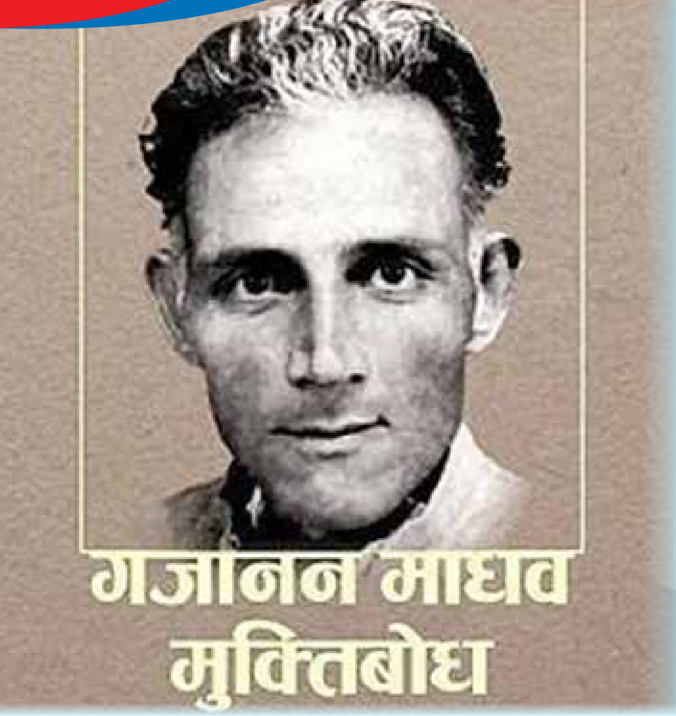

मुक्तिबोध

हिंदी साहित्य में कई महान काव्य-रचनाकार हुए हैं जिन्होंने अपनी लेखनी से समाज और साहित्य दोनों को गहरे रूप से प्रभावित किया. उनमें से एक नाम **मुक्तिबोध** का है, जिनकी काव्य-रचनाएँ आज भी भारतीय साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए हैं. मुक्तिबोध का साहित्य केवल कला की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि समाज की वर्तमान स्थिति पर गहरी और सार्थक टिप्पणी भी है. उनकी कविताएँ केवल व्यक्तिगत विचारों या भावनाओं का उद्घाटन नहीं करतीं, बल्कि वे पूरी समाज व्यवस्था, उसके वर्ग संघर्ष, और मानसिक तनावों पर गंभीर विमर्श प्रस्तुत करती हैं. उनके साहित्यिक योगदान को समझने के लिए उनके जीवन, विचार और काव्यशैली की गहरी पड़ताल आवश्यक है. **मुक्तिबोध** (1927-1964) हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण कवि और लेखक थे, जिनकी कविता और विचारधारा ने भारतीय साहित्य में गहरी छाप छोड़ी. उनका असली नाम **रामकृष्ण यादव** था, लेकिन साहित्यिक नाम **''मुक्तिबोध''** के तहत वे अधिक प्रसिद्ध हुए. उनका जन्म मध्य प्रदेश के शहडोल जिले में हुआ था.

1. मुक्तिबोध का जीवन

मुक्तिबोध का जन्म 1917 में मध्य प्रदेश के शहडोल जिले के छोटे से गाँव **नौनहाली** में हुआ था. उनका असली नाम **रामकृष्ण यादव** था, लेकिन साहित्यिक क्षेत्र में वे 'मुक्तिबोध' के नाम से प्रसिद्ध हुए. उनके पिता एक सरकारी कर्मचारी थे, और वे परिवार के साथ जगह-जगह रहे, जिससे मुक्तिबोध को विभिन्न सांस्कृतिक और सामाजिक परिवेशों का अनुभव हुआ. मुक्तिबोध का जीवन संघर्षपूर्ण था. आर्थिक तंगी और मानसिक तनाव से गुजरते हुए उन्होंने साहित्य के माध्यम से अपनी आंतरिक दुनिया और बाहरी दुनिया के संघर्ष को व्यक्त किया.

उनकी शिक्षा भी बहुत साधारण नहीं थी. उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. (काव्यशास्त्र) की डिग्री प्राप्त की. इसके बाद उन्होंने कई सरकारी नौकरियों में काम किया, लेकिन उनका मन हमेशा साहित्य, विशेष रूप से कविता में रमा रहा. यही कारण था कि उन्होंने अपने जीवन के अधिकांश समय को लेखन और साहित्य की साधना में समर्पित किया.

2. साहित्यिक विचारधारा

मुक्तिबोध की साहित्यिक पहचान उनके विचारों और कविताओं के माध्यम से बनी. वे कवि के रूप में न केवल भारतीय समाज की आलोचना करते थे, बल्कि उन्होंने उस समय के राजनीतिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में अपनी कविता को गढ़ा. वे **सामाजिक यथार्थवाद** के पक्षधर थे और उनके काव्य में यह स्पष्ट रूप से झलकता है. वे मानते थे कि कविता केवल आनंद प्रदान करने का साधन नहीं हो सकती, बल्कि यह समाज के भीतर व्याप्त असमानताओं, अन्याय और उत्पीड़न की आलोचना करने का माध्यम भी हो सकती है.

मुक्तिबोध ने अपनी कविताओं में जीवन के यथार्थ को, विशेषकर अंधकार, अकेलेपन, निराशा, और मानसिक संघर्ष को प्रमुखता दी. उनकी कविताओं में अंधकार एक प्रतीक के रूप में उभरा है, जो व्यक्ति की सामाजिक, मानसिक और अस्तित्वगत स्थिति को प्रदर्शित करता है. उनका मानना था कि समाज के भीतर के अंधकार को केवल जागरूकता और चेतना के माध्यम से ही दूर किया जा सकता है.

उनकी कविता में **वर्ग संघर्ष** की एक स्पष्ट पहचान है. वे समाज के दबे-कुचले वर्ग के प्रति अपनी सहानुभूति दिखाते थे और उनकी कविता में यह वर्ग संघर्ष हमेशा महत्वपूर्ण स्थान पर था. मुक्तिबोध का मानना था कि यदि समाज में कोई बदलाव आना है, तो यह बदलाव सबसे पहले मानसिक और विचारात्मक स्तर पर होना चाहिए.

3. काव्यशैली

मुक्तिबोध की काव्यशैली अत्यधिक गहरी और प्रतीकात्मक थी. उनके काव्य में प्रतीकवाद, निहितार्थ, और अभिव्यक्तियों

की गहरी समझ दिखाई देती है. उनकी कविता में अंधकार, असमंजस, और विकृति जैसे शब्दों का अत्यधिक प्रयोग होता है. यह सब उनकी कविता के भीतर छिपे हुए भावनात्मक और मानसिक संघर्ष को व्यक्त करता है. उनका कवि हृदय उन शब्दों और विचारों के माध्यम से समाज के भीतर व्याप्त भ्रम और अंधकार को उजागर करना चाहता था.

उनकी काव्यशैली में **काव्यात्मक निराशावाद** और **आत्ममंथन** प्रमुख तत्व रहे. वे अपने समय के सामाजिक और राजनीतिक परिप्रेक्ष्य से सख्त असंतुष्ट थे, और यही असंतोष उनकी कविताओं में गहराई से प्रकट हुआ. हालांकि उनकी कविता कभी भी एकतरफा नकारात्मकता या निराशावाद से भरी नहीं होती, बल्कि वे हमेशा एक संभावना की ओर इशारा करते थे - एक संभावना जो बुराई और अंधकार से मुक्ति की ओर जाती है.

4. प्रमुख काव्य रचनाएँ

मुक्तिबोध की प्रमुख कविताओं में उनकी काव्य-यात्रा की दिशा और उद्देश्य साफ़ तौर पर दिखाई देते हैं. उनके कुछ प्रसिद्ध काव्य संग्रह हैं:

1. **''अंधेरे में''**- यह उनकी प्रमुख काव्य रचनाओं में से एक है. इस संग्रह में उनकी कविता का स्वर घना और गहरे अर्थों से भरा हुआ है. उनकी कविता का यह संग्रह समाज की विद्रूपताओं, अंधकार, और मानसिक द्वंद्व को लेकर है.

2. **''ब्रह्मराक्षस''**- यह कविता मुक्तिबोध के विचारों की गहरी अभिव्यक्ति है. इसमें उन्होंने भारतीय समाज की राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों की आलोचना की है.

3. **''वह दिन''**- यह संग्रह विशेष रूप से मुक्तिबोध के जीवन के कठिन समयों और उनके मानसिक संघर्ष को दर्शाता है.

4. **''भारत का भविष्य''**- इस कविता में मुक्तिबोध ने भारतीय समाज के भविष्य को लेकर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं, जिसमें उन्होंने समाज की आंतरिक समस्याओं और असमानताओं को रेखांकित किया.

5. मुक्तिबोध का दृष्टिकोण और उनकी समकालीन कविता

मुक्तिबोध के समय में हिंदी कविता का परिप्रेक्ष्य तेजी से बदल रहा था. प्रगतिवाद, संवेदनावाद और नवकाव्य जैसे काव्य आंदोलन प्रमुख थे, लेकिन मुक्तिबोध इन सभी आंदोलनों से अलग अपनी अनूठी काव्यशैली की खोज कर रहे थे. वे प्रगतिवादी काव्यधारा के समर्थक थे, लेकिन उनकी कविता में प्रगति का स्वर केवल बाहरी सुधारों तक सीमित नहीं था, बल्कि यह मनुष्य के भीतरी परिवर्तन की ओर संकेत करता था.

मुक्तिबोध ने अपनी कविता में राजनीतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत स्तर पर जो गंभीर प्रश्न उठाए, वे आज भी प्रासंगिक हैं. उनकी कविता में मानसिक अस्तित्व, आत्मविवेक, और सामाजिक संघर्ष के बीच की जटिलताओं को छुआ गया है. वे केवल अपने समय के कवि नहीं थे, बल्कि वे आनेवाले समय के लिए भी साहित्य के एक महान आदर्श बने.

6. मुक्तिबोध का योगदान और उनकी स्थायी धरोहर

मुक्तिबोध का योगदान केवल उनकी कविताओं तक सीमित नहीं है. वे एक ऐसे साहित्यकार थे जिन्होंने हिंदी कविता को एक नया दिशा दी और उसे समाज के गहरे, कभी न देखे गए पहलुओं से परिचित कराया. उन्होंने यह साबित किया कि कविता केवल एक कला नहीं है, बल्कि यह समाज के भीतर मौजूद कष्टों, असमानताओं और संघर्षों की गहरी अभिव्यक्ति भी हो सकती है. उनका साहित्य आज भी प्रासंगिक है, क्योंकि उन्होंने जो समस्याएँ उठाई थीं, वे आज भी हमारे समाज में विद्यमान हैं.

मुक्तिबोध का साहित्य केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि एक सामाजिक चेतना और जागरूकता का प्रतीक है. उनकी कविताएँ हमेशा पाठकों को इस प्रश्न पर सोचने के लिए मजबूर करती हैं कि हम समाज में क्या बदलाव ला सकते हैं और इस बदलाव की दिशा क्या होनी चाहिए.

निष्कर्ष

मुक्तिबोध की कविता, उनके विचार और उनका जीवन एक प्रेरणा हैं. उन्होंने साहित्य के माध्यम से न केवल अपनी पीढ़ी को बल्कि आनेवाले समय को भी विचारशीलता और आलोचनात्मक दृष्टिकोण का संदेश दिया. उनका लेखन समाज के प्रति उनकी गहरी संवेदनशीलता और गहन बोध का परिणाम था. मुक्तिबोध का योगदान न केवल हिंदी साहित्य में, बल्कि समग्र भारतीय साहित्य में एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में गिना जाएगा.

श्री जय शंकर प्रसाद
अंचल प्रमुख
पटना

सामाजिक सहबद्धता की आवश्यकता

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी हैं. हमें एक-दूसरे से संवाद करने और . जरूरत पड़ने पर मदद के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहने की आदत है. हमारा पूरा समाज एक दूसरे पर निर्भर करता है. कुछ जानवर अकेले रहना पसंद करते हैं, जैसे कि बिल्लियाँ या कछुए, और वे अपनी पूरी ज़िंदगी अपनी प्रजाति के साथ सीमित संपर्क के साथ बिता सकते हैं और ठीक से रह सकते हैं. हम मछलियों के झुंड, भेड़ियों के झुंड या पक्षियों के झुंड की तरह ही काम करते हैं- हम सामूहिक रूप से काम करने और जीवित रहने के लिए एक साथ समूह बनाना और अपने समूह के भीतर भूमिकाएँ निभाना पसंद करते हैं. हम नियमित रूप से दूसरों के साथ संवाद करते हैं, आमतौर पर व्यवसाय या जीवनशैली के कारण हम एक दूसरे के संपर्क में आते हैं . बेशक, कुछ लोग दूसरों की तुलना में अधिक सामाजिकता और संपर्क पसंद करते हैं, लेकिन हम सभी को इसकी ज़रूरत होती है. कुछ लोगों को दर्जनों दोस्त रखना और एक टीम के हिस्से के रूप में दैनिक आधार पर काम करना पसंद होता है, जिसमें बहुत से अजनबियों के साथ बातचीत होती है. हममें से कुछ लोग अपनी जगह पसंद करते हैं और केवल अपने जीवनसाथी और करीबी परिवार की संगति का आनंद लेते हैं, ऐसे व्यवसाय पसंद करते हैं जो हमें अकेले और स्वतंत्र रूप से काम करने की अनुमति देते हैं. बहरहाल, हर किसी को कम से कम कुछ अन्य लोगों के साथ मेलजोल करना पसंद होता है, और हमें अपने मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी इसकी आवश्यकता होती है.

कोविड के कारण हमें अभूतपूर्व स्तर पर अलगाव का सामना करना पड़ा. हम लगातार लोगों के बीच रहने से लेकर घर पर लॉकडाउन में रहने तक पहुँच गए. हमें अपने परिवार और दोस्तों से कम मिलना पड़ा या स्क्रीन के ज़रिए मिलना पड़ा, संभवत: हमारी पढ़ाई या काम घर पर ही हो गया, और हमारी सभी गतिविधियाँ और यात्राएँ साल भर के लिए रद्द हो गईं. एक सामाजिक प्रजाति के रूप में, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि इस समय के दौरान हमारी मानसिक बीमारी और नकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य लक्षण दर में वृद्धि हुई .

समाजीकरण व्यक्तियों और समाज दोनों के लिए महत्वपूर्ण है. यह दर्शाता है कि मनुष्य और उनकी सामाजिक दुनियाएँ किस तरह से एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं.समाजीकरण महत्वपूर्ण है क्योंकि यह समाज और संस्कृतियों को बनाए रखने में मदद करता है, यह व्यक्तिगत विकास का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है. यह दर्शाता है कि मनुष्य और उनकी सामाजिक दुनियाएँ किस तरह से आपस में जुड़ी हुई हैं. सबसे पहले, नए सदस्यों को संस्कृति सिखाने के ज़रिए ही समाज खुद को बनाए रखता है. अगर किसी समाज की नई पीढ़ी उसके जीने के तरीके को नहीं सीखती, तो उसका अस्तित्व समाप्त हो जाता है. किसी समाज के जीवित रहने के लिए संस्कृति के बारे में जो भी खासियत है, उसे उन लोगों तक पहुँचाया जाना चाहिए जो उससे जुड़ते हैं. वास्तव में, ऐसे कई विचार और वस्तुएँ हैं, जिनके बारे में लोग बच्चों को सिखाते हैं. ताकि समाज की जीवन शैली को अगली पीढ़ी तक जारी रखा जा सके.

सामाजिक संपर्क वह साधन प्रदान करता है जिसके माध्यम से हम धीरे-धीरे दूसरों की नज़र से खुद को देखने में सक्षम हो जाते हैं, और हम कैसे सीखते हैं कि हम कौन हैं और हम अपने आस-पास की दुनिया में कैसे फिट होते हैं. इसके अलावा, समाज में सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए, हमें भौतिक और अभौतिक दोनों तरह की संस्कृति की मूल बातें सीखनी होंगी, खुद को कैसे तैयार करना है से लेकर किसी खास अवसर के लिए कौन सी पोशाक उपयुक्त है; हम कब सोते हैं और क्या पहनते हैं, और रात के खाने के लिए क्या खाना उचित माना जाता है से लेकर इसे पकाने के लिए चूल्हे का उपयोग कैसे करें. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हमें संवाद करने और सोचने के लिए भाषा सीखनी होती है.

हम जो कुछ भी करते हैं, उसका अधिकांश हिस्सा दूसरे लोगों पर केंद्रित होता है. हम देखते हैं कि दूसरे लोग सोशल मीडिया पर क्या कर रहे हैं, अपने मस्तिष्क के उन क्षेत्रों को सक्रिय करते हैं जो निर्णय या भावना से जुड़े होते हैं. हम टीवी पर पात्रों को एक-दूसरे के साथ बातचीत करते हुए देखते हैं और उनके साथ सहानुभूति रखते हैं, उनका उत्साहवर्धन करते हैं और उनकी स्थितियों के बारे में सोचते हैं. हम अपने सहकर्मियों के साथ काम की बैठकें करते हैं ताकि लोगों की पूरी टीम को लाभ मिल सके, संरचनात्मक तरीके से दूसरों के विचारों और जरूरतों के साथ घुलमिल सकें. यहां तक कि जब हमें नहीं लगता कि हम ''सामाजिक'' हो रहे हैं, तब भी हम महत्वपूर्ण मानवीय संपर्क कर रहे हैं, और ये हमेशा हमारे समाज और खुद दोनों के लिए आवश्यक हैं . अगर आप उदास महसूस कर रहे हैं या ऐसा महसूस कर रहे हैं कि आपके जीवन में कुछ कमी है, तो माता-पिता को कॉल करने, कोई नया शौक अपनाने, किसी मित्र के साथ कोई गतिविधि शेड्यूल करने या सिर्फ़ बातचीत करने के लिए जीवनसाथी के साथ डिनर पर जाने का प्रयास करें. आपको आश्चर्य हो सकता है कि यह कितनी जल्दी और आसानी से आपकी मदद कर सकता है.

संदीप कुमार जायसवाल
वरिष्ठ प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय , गोरखपुर

डिजिटल भारत में फिनटेक के प्रसार में भारतीय भाषाओं की भूमिका

प्रस्तावना: वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) क्रांति ने अभूतपूर्व सुविधा, दक्षता और समावेशिता लाते हुए दुनिया भर में वित्तीय परिदृश्य को नाटकीय रूप से नया आकार दिया है. भारत में, जहां विविध भाषाई और सांस्कृतिक टेपेस्ट्री,तेजी से तकनीकी अपनाने के साथ उपलब्ध है, फिनटेक प्लेटफार्मों में भारतीय भाषाओं का एकीकरण महत्वपूर्ण है. यह एकीकरण केवल सुविधा का मामला नहीं है बल्कि वित्तीय समावेशन, डिजिटल साक्षरता और समान विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है.भारत, अपनी विशाल आबादी और विविध भाषाई परिदृश्य के साथ, डिजिटल क्रांति में सबसे आगे खड़ा है. रोजमर्रा की जिंदगी में वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) के एकीकरण से अर्थव्यवस्था को बदलने और लाखों लोगों को गरीबी से ऊपर उठाने की क्षमता है. फिनटेक को बढ़ावा देने में भारतीय भाषाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह सभी जनसांख्यिकी में समावेशिता और पहुंच सुनिश्चित करती है.

फिनटेक क्या है?

शब्द ''फिनटेक'', ''वित्तीय'' और ''प्रौद्योगिकी'' शब्दों का एक संयोजन है. यह उपभोक्ताओं तक वित्तीय सेवाएं और उत्पाद पहुंचाने के लिए प्रौद्योगिकी के उपयोग को बताता है. यह बैंकिंग, बीमा, निवेश - वित्त से संबंधित किसी भी क्षेत्र में हो सकता है. प्रौद्योगिकी ने हमेशा वित्तीय उद्योग को बदला है. स्मार्टफोन और टैबलेट जैसे उपकरणों के व्यापक उपयोग के साथ इंटरनेट का मतलब है कि हाल के वर्षों में इस बदलाव की गति बहुत तेज हो गई है.

फिनटेक वित्तीय लेनदेन को सुव्यवस्थित करने, उन्हें तेज़, अधिक सुरक्षित और अधिक कुशल बनाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता, बड़े डेटा और ब्लॉकचेन जैसी अत्याधुनिक तकनीकों का उपयोग करता है.

फिनटेक कैसे काम करता है?

फिनटेक निर्बाध और उपयोगकर्ता के अनुकूल अनुभव बनाने के लिए पारंपरिक वित्तीय सेवाओं को आधुनिक तकनीक के साथ एकीकृत करके संचालित होता है. प्रमुख घटकों में शामिल हैं:

1. **डिजिटल भुगतान:** यूपीआई (यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस), डिजिटल वॉलेट (जैसे, पेटीएम, गूगल पे) और ऑनलाइन बैंकिंग जैसी सेवाओं ने लोगों के पैसे ट्रांसफर करने और भुगतान करने के तरीके में क्रांति ला दी है.
2. **डिजिटल ऋण:** इसमें प्रमाणीकरण और क्रेडिट मूल्यांकन के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर वेब प्लेटफॉर्म या मोबाइल ऐप के माध्यम से ऋण देना शामिल है. बैंकों ने पारंपरिक ऋण देने में मौजूदा क्षमताओं का लाभ उठाकर डिजिटल ऋण बाजार में प्रवेश करने के लिए अपने स्वयं के स्वतंत्र डिजिटल ऋण प्लेटफॉर्म लॉन्च किए हैं. बैंकों ने अपने ग्राहकों को बेहतर सेवा देने के लिए फिनटेक के साथ साझेदारी की है
3. **ऋण देने वाले प्लेटफ़ॉर्म:** पीयर-टू-पीयर (पी2पी) ऋण देने वाले प्लेटफ़ॉर्म उधारकर्ताओं को सीधे ऋणदाताओं से जोड़ते हैं, पारंपरिक बैंकों को दरकिनार करते हैं और अधिक लचीली शर्तों की पेशकश करते हैं.
4. **रोबो-सलाहकार:** स्वचालित प्लेटफ़ॉर्म एक विविध पोर्टफोलियो बनाने और प्रबंधित करने के लिए एल्गोरिदम का उपयोग करके वित्तीय सलाह और निवेश प्रबंधन प्रदान करते हैं.
5. **ब्लॉकचेन और क्रिप्टोकरेंसी:** ये प्रौद्योगिकियां लेनदेन करने के सुरक्षित, पारदर्शी और विकेंद्रीकृत तरीके प्रदान करती हैं, संभावित रूप से धोखाधड़ी को कम करती हैं और विश्वास बढ़ाती हैं.
6. **इंश्योरटेक:** यह उपक्षेत्र बीमा उद्योग को बेहतर बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करता है, जिससे इसे डिजिटल नीति प्रबंधन और स्वचालित दावा प्रसंस्करण के माध्यम से अधिक कुशल और ग्राहक-अनुकूल बनाया जाता है.

भारत जैसे देश के लिए फिनटेक कैसे उपयोगी है?

भारत, अपनी बड़ी बैंक रहित आबादी और विविध सामाजिक आर्थिक परिदृश्य के साथ, फिनटेक प्रगति से महत्वपूर्ण लाभ प्राप्त करने के लिए तैयार है. इन प्राथमिक लाभों में शामिल हैं:

1. **वित्तीय समावेशन:** फिनटेक दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों में वित्तीय सेवाओं तक पहुंच प्रदान करके बैंक और बैंक रहित आबादी के बीच अंतर को पाट सकता है.
2. **आर्थिक विकास:** ऋण, निवेश के अवसरों और कुशल भुगतान प्रणालियों तक आसान पहुंच प्रदान करके, फिनटेक आर्थिक गतिविधि और विकास को प्रोत्साहित कर सकता है.
3. **नौकरी सृजन:** फिनटेक क्षेत्र अपने आप में एक उभरता हुआ उद्योग है, जो रोजगार के कई अवसर पैदा करता है और नवाचार और उद्यमशीलता को बढ़ावा देता है.
4. **दक्षता और लागत में कमी:** डिजिटल वित्तीय सेवाएं भौतिक

बुनियादी ढांचे की आवश्यकता को कम करती हे, वित्तीय संस्थानों और ग्राहकों के लिए परिचालन लागत को कम करती हैं.

5. **पारदर्शिता और सुरक्षा:** ब्लॉकचेन जैसी प्रौद्योगिकियां वित्तीय लेनदेन में पारदर्शिता और सुरक्षा बढ़ाती हैं, जिससे धोखाधड़ी और भ्रष्टाचार की घटनाएं कम होती हैं.

भारत में वैश्विक स्तर पर फिनटेक अपनाने की दर सबसे अधिक 87% है जो वैश्विक औसत दर 64% से काफी अधिक है.भारत दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते फिनटेक बाजारों में से एक है. भारतीय फिनटेक उद्योग का बाजार आकार 2021 में $50 बिलियन है और 2025 तक $150 बिलियन होने का अनुमान है.भारतीय फिनटेक उद्योग का कुल पता योग्य बाजार 2025 तक 1.3 ट्रिलियन डॉलर और प्रबंधन के तहत परिसंपत्तियां और राजस्व 2030 तक क्रमश: 1 ट्रिलियन डॉलर और 200 बिलियन डॉलर होने का अनुमान है.

भाषा संबंधी बाधाओं पर काबू पाकर सेवा प्रदान करना

भारत में फिनटेक अपनाने को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक भाषा बाधाओं पर काबू पाना है. भारत 22 आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त भाषाओं और सैकड़ों बोलियों का घर है. जबकि अंग्रेजी और हिंदी शहरी और अर्ध-शहरी परिदृश्यों पर हावी हैं, ग्रामीण आबादी का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मुख्य रूप से क्षेत्रीय भाषाओं में संचार करता है. फिनटेक अपनाने के लिए भाषा संबंधी बाधाओं पर काबू पाना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह समावेशिता और प्रभावी संचार सुनिश्चित करता है. इस चुनौती से निपटने के लिए, फिनटेक कंपनियां कई रणनीतियाँ अपना रही हैं:

1. **बहुभाषी इंटरफ़ेस:** फिनटेक प्लेटफ़ॉर्म बहुभाषी उपयोगकर्ता इंटर. फेस को शामिल कर रहे हैं, जो उपयोगकर्ताओं को एप्लिकेशन नेविगेट करने और अपनी पसंदीदा भाषा में लेनदेन करने में सक्षम बनाता है. हिंदी, बंगाली, तमिल, तेलुगु और मराठी जैसी भाषाओं के लिए समर्थन की पेशकश करके, फिनटेक कंपनियां विविध भाषाई समुदायों के लिए पहुंच और उपयोगकर्ता अनुभव को बढ़ाती हैं.
2. **आवाज-आधारित सेवाएं:** कई ग्रामीण और अर्ध-साक्षर आबादी को पाठ-आधारित (टेक्स्ट-बेसड) की तुलना में आवाज की बातचीत अधिक सहज लगती है. क्षेत्रीय भाषाओं में वॉयस-सक्रिय सेवाएं उपयोगकर्ता अनुभव और स्वीकार्यता को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाती हैं. वॉयस-सक्षम इंटरफेस और प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) तकनीक द्वारा संचालित आभासी सहायक बोले गए आदेशों और प्रश्नों के माध्यम से फिनटेक प्लेटफार्मों के साथ बातचीत की सुविधा प्रदान करते हैं. आवाज-आधारित सेवाएं कम साक्षरता स्तर या लिखित भाषाओं में सीमित दक्षता वाले उपयोगकर्ताओं को सहायता करती हैं, जिससे फिनटेक सेवाओं की पहुंच का विस्तार होता है.
3. **भाषा स्थानीयकरण:** फिनटेक कंपनियां क्षेत्रीय संदर्भों में सटीकता और प्रासंगिकता सुनिश्चित करने के लिए अनुवाद सेवाओं, सांस्कृतिक अनुकूलन और भाषाई परीक्षण सहित भाषा स्थानीयकरण प्रयासों में निवेश कर रही हैं. लक्षित दर्शकों की भाषाई बारीकियों और सांस्कृतिक प्राथमिकताओं को समझकर, फिनटेक प्रदाता विविध उपयोगकर्ता क्षेत्रों के अनुरूप अपनी पेशकशों को तैयार कर रहे हैं.
4. **क्षेत्रीय भागीदारी:** स्थानीय संगठनों, सामुदायिक नेताओं और भाषा विशेषज्ञों के साथ सहयोग फिनटेक कंपनियों को क्षेत्रीय बोलियों, मुहावरों और स्थानीय अभिव्यक्तियों में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में सक्षम बनाता है. क्षेत्रीय बैंकों, माइक्रोफाइनेंस संस्थानों और सरकारी एजेंसियों के साथ साझेदारी से वंचित क्षेत्रों में फिनटेक सेवाओं की डिलीवरी की सुविधा भी मिलती है.
5. **स्थानीय भाषाओं में ग्राहक सहायता:** क्षेत्रीय भाषाओं में ग्राहक सहायता प्रदान करने से यह सुनिश्चित होता है कि उपयोगकर्ता, भाषा की बाधाओं के बिना सहायता प्राप्त कर सकते हैं और समस्याओं का समाधान कर सकते हैं,जिससे विश्वास और विश्वसनीयता का निर्माण होता हैं.

वित्तीय समावेशन के लिए अंतिम मील तक पहुँचने का एक उपकरण

वित्तीय समावेशन का उद्देश्य सभी व्यक्तियों के लिए वित्तीय सेवाओं को सुलभ और किफायती बनाना है, चाहे उनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति या भौगोलिक स्थिति कुछ भी हो. डिजिटल प्रौद्योगिकी और नवीन व्यवसाय मॉडल का लाभ उठाकर, फिनटेक कंपनियां भौगोलिक दूरदर्शिता, बुनियादी ढांचे की कमी और सीमित बैंकिंग पहुंच सहित , वित्तीय पहुंच में आने वाली पारंपरिक बाधाओं को दूर कर सकती हैं. अंतिम मील तक पहुँचने की प्रमुख रणनीतियों में शामिल हैं:

1. **मोबाइल मनी सॉल्यूशंस:** मोबाइल-आधारित भुगतान प्रणाली और डिजिटल वॉलेट दूरदराज के क्षेत्रों में व्यक्तियों को बुनियादी फीचर फोन का उपयोग करके वित्तीय लेनदेन करने में सक्षम बनाते हैं. मौजूदा मोबाइल नेटवर्क और एजेंट बैंकिंग नेटवर्क का लाभ उठाकर, फिनटेक प्रदाता, पारंपरिक बैंकिंग ढांचे तक पहुंच से वंचित समुदायों तक वित्तीय सेवाएं प्रदान करते हैं.
2. **माइक्रोफाइनेंस और माइक्रोक्रेडिट:** फिनटेक प्लेटफॉर्म माइक्रोफाइनेंस और माइक्रोक्रेडिट सेवाओं की सुविधा प्रदान करते हैं, जिससे छोटे किसानों, कारीगरों और उद्यमियों को उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप ऋण, बचत और बीमा उत्पादों तक पहुंचने में सक्षम बनाया जाता है. ऋण वितरण, पुनर्भुगतान और जोखिम मूल्यांकन को डिजिटल बनाकर, फिनटेक कंपनियां परिचालन लागत को कम करती हैं और ग्रामीण और हाशिए पर रहने वाली आबादी (मार्जिनलाइज़ पोपुलेसन) तक वित्तीय सेवाओं की पहुंच का विस्तार करती है.
3. **वित्तीय साक्षरता और शिक्षा:** फिनटेक पहल वंचित समुदायों के बीच वित्तीय साक्षरता और शिक्षा को बढ़ावा देने, व्यक्तियों को बचत, निवेश और वित्तीय योजना के बारे में सूचित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाने पर ध्यान केंद्रित करती है. मोबाइल-आधारित शिक्षण मॉड्यूल, इंटरैक्टिव टूल और गेमिफाइड अनुभव वित्तीय साक्षरता को बढ़ाते हैं और उपयोगकर्ताओं के बीच जिम्मेदार

वित्तीय व्यवहार को बढ़ावा देते हैं.

4. **सरकारी योजनाएं और सब्सिडी:** फिनटेक लाभार्थियों को सरकारी सब्सिडी और लाभ के सीधे अंतरण की सुविधा प्रदान कर सकता है, पारदर्शिता सुनिश्चित कर सकता है और रिसाव को कम कर सकता है. इन योजनाओं को स्थानीय भाषाओं में संचारित करने से यह सुनिश्चित होता है कि इच्छित लाभार्थी जागरूक हैं और इन लाभों का लाभ उठा सकते हैं.

5. **उद्यमिता और कौशल विकास:** फिनटेक वित्तीय सेवाओं और डिजिटल बाज़ारों तक आसान पहुंच प्रदान करके छोटे उद्यमियों का समर्थन करता है. स्थानीय भाषाओं में शैक्षिक सामग्री उन्हें अपने व्यावसायिक कौशल और वित्तीय प्रबंधन में सुधार करने में मदद कर सकती है

भारत में सफल फिनटेक यूनिकॉर्न: भारत दुनिया में सबसे अधिक वित्तीय प्रौद्योगिकी (फिनटेक) यूनिकॉर्न(यूनिकॉर्न ऐसे स्टार्टअप को कहते हैं जो निजी रूप से ओन्ड हैं और जिनकी वैल्यूएशन 1 बिलियन डॉलर से अधिक है) वाले देशों में तीसरे स्थान पर है. भारत में सफल फिनटेक यूनिकॉर्न में अक्को इंश्योरेंस, भारतपे, बिलडेस्क, चार्जबी, कॉइनडीसीएक्स, कॉ इनस्विच कुबेर, क्रेड, क्रेडअवेन्यू, डिजिट इंश्योरेंस, ग्रोव, मोबीक्विक, वनकार्ड, ओपन, ऑक्सीजो, पेटीएम, फोनपे, पाइन लैब्स, पॉलिसीबाज़ार, रेज़रपे, स्लाइस , ज़ेरोधा, ज़ेटा, वीसा, पेपैल, मास्टरकार्ड शामिल है .

चुनौतियाँ और आगे का रास्ता :

हालाँकि वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में फिनटेक की क्षमता बहुत अधिक है, फिर भी कई चुनौतियों पर ध्यान देने की आवश्यकता है:

1. **डिजिटल साक्षरता:** स्मार्टफोन की बढ़ती पहुंच के बावजूद, भारत के कई हिस्सों में डिजिटल साक्षरता कम है. फिनटेक सेवाओं का सुरक्षित और प्रभावी ढंग से उपयोग करने के बारे में आबादी को शिक्षित करना महत्वपूर्ण है.

2. **बुनियादी ढाँचा:** कई ग्रामीण क्षेत्रों में अभी भी विश्वसनीय इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल बुनियादी ढाँचे की कमी है, जो फिनटेक को व्यापक रूप से अपनाने में बाधा बन रही है.

3. **साइबर सुरक्षा:** जैसे-जैसे फिनटेक को अपनाना बढ़ रहा है, वैसे-वैसे साइबर खतरों का खतरा भी बढ़ रहा है. मजबूत साइबर सुरक्षा उपायों को सुनिश्चित करना और उपयोगकर्ताओं को सुरक्षित ऑनलाइन प्रथाओं के बारे में शिक्षित करना आवश्यक है.

4. **नियामक ढाँचा:** उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करते हुए नवाचार को बढ़ावा देने के लिए एक सहायक और अनुकूली नियामक वातावरण आवश्यक है.

उपसंहार

डिजिटल इंडिया के लिए फिनटेक को बढ़ावा देने में भारतीय भाषाओं की भूमिका अपरिहार्य है. यह सुनिश्चित करके कि फिनटेक समाधान क्षेत्रीय भाषाओं में उपलब्ध हैं, हम शहरी और ग्रामीण आबादी के बीच अंतर को पाट सकते हैं, वित्तीय समावेशन और आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकते हैं. भाषाई विविधता को अपनाकर और भाषाई बाधाओं पर काबू पाकर, फिनटेक कंपनियां वित्तीय समावेशन का विस्तार कर सकती हैं, आर्थिक विकास को गति दे सकती हैं और देश भर में हाशिए पर रहने वाले समुदायों को सशक्त बना सकती हैं.

भाषा संबंधी बाधाओं पर काबू पाने से न केवल उपयोगकर्ता अनुभव बढ़ता है, बल्कि उपयोगकर्ताओं के बीच विश्वास और भरोसा भी पैदा होता है, जिससे वास्तव में समावेशी डिजिटल अर्थव्यवस्था का मार्ग प्रशस्त होता है. नवोन्मेषी समाधानों, रणनीतिक साझेदारियों और लक्षित हस्तक्षेपों के माध्यम से, फिनटेक भारत में अधिक समावेशी और न्यायसंगत वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है. जैसे-जैसे भारत डिजिटल परिवर्तन की दिशा में अपनी यात्रा जारी रख रहा है, डिजिटल इंडिया के दृष्टिकोण को साकार करने और यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई भी पीछे न छूटे, फिनटेक में भारतीय भाषाओं का एकीकरण आवश्यक रहेगा.

राकेश कुमार सैनी
मुख्य प्रबंधक / संकाय सदस्य
सर एसपीबीटी महाविद्यालय

बिहार के गौरव और स्वाभिमान का प्रतीक 'मधुबनी पेंटिंग'

हमारा देश भारत विभिन्न कलाओं, संस्कृतियों, और रचनात्मक अभिव्यक्तियों का देश है। इस देश के हर हिस्से से भिन्न-भिन्न सोच-विचार के लोग अपनी अभिव्यक्ति को अलग-अलग ढंग से व्यक्त करते हैं, जिसमें सबसे सशक्त माध्यम के रूप में चित्राभिव्यक्ति भी है। तो इसी अभिव्यक्ति का प्रयोग आज बिहार के कुछ हिस्सों में लोकजन मधुबनी पेंटिंग यानी चित्रकला के जरिए कर रहे हैं। यह कला भारत और विदेशों के सबसे प्रसिद्ध कलाओं में से एक में गिना जाता है। यद्यपि इस कला की उत्पत्ति मिथिला क्षेत्र में हुई है तो इसलिए इसे मिथिला चित्रों के रूप में भी जाना जाता है। समृद्धि और शांति के रूप में भगवान का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए इन कलाओं की इस अनूठी शैली का इस्तेमाल महिलाएँ अपने घरों और दरवाजों को सजाने के लिए किया करती है।

मधुबनी पेंटिंग बिहार की एक प्रमुख चित्र शैली है, जिसमें प्रकृति, धर्म और सामाजिक संस्कारों के चित्रों को ग्रामीण परिवेश में उकेरा जाता है। इसकी जड़े बिहार और नेपाल के मिथिला क्षेत्र तक है। शुरुआती दौर में यह लोकप्रिय चित्रकला पूर्णतया महिला केन्द्रित रहा है किन्तु समयांतर इसकी प्रसिद्धि ने पुरुषों को भी आकर्षित किया है। फलत: आज महिला और पुरूष की जोड़ी ने इस कला को दूर तक प्रचारित व प्रसारित किया है।

बिहार के मिथिलांचल क्षेत्र की मधुबनी लोक चित्रकला का इतिहास प्राचीन रहा है। किंवदंती है कि इस कला की शुरुआत रामायण काल से हुई है। मिथिला के राजा जनक ने अपनी पुत्री सीता के विवाह के अवसर पर मधुबनी लोक चित्रकला का चित्रण संपूर्ण मिथिला क्षेत्र में स्थानीय ग्रामीण महिलाओं द्वारा कराया था। तब से आज तक यह काल लोक और विश्व व्याप्त हो गया है। इस कला का विषय मुख्य रूप से हिन्दु देवी-देवताओं व प्रकृति के मनोरमा दृश्यों को उकेरने से रहा है। मधुबनी चित्रकला में मुख्य रूप से राम-सीता, शिव-पार्वती, राधा-कृष्ण, गणेश-लक्ष्मी, काली-दुर्गा और हनुमान जैसे हिन्दु देवी-देवताओं को अपने चित्रकला में स्थान देते हैं।

मधुबनी चित्रकला का प्रयोग महिलाएँ प्राय: किसी मंगल कामना या भावना को लिए हुए अपने घरों की दीवारों व आंगन को संजाने के लिए किया करती है। वे अपने कल्पनालोक में जाकर ऐतिहासिक, धार्मिक व आध्यात्मिक आदि से जुड़ा विषय लेकर शुद्ध-देशी रंगों के द्वारा कलात्मक चित्रों को उकेरती हैं। जहाँ मधुबनी चित्रकला में देशी शुद्ध रंगों को व्यापक किया जाता है, तो वहीं इसमें विभिन्न रेखाओं का भी प्रयोग किया जाता है। इसके जारिए चित्रों में बचे खाली स्थानों को भरने के लिए समानांतर, सीधी, खड़ी, पड़ी, कर्णवत, घुमावदार, वक्राकार आदि विविध रेखाओं का प्रयोग किया जाता है।

मधुबनी लोक चित्रों को मुख्य रूप से तीन वर्गों में विभक्त किया गया हैं-

क. भित्ति चित्र (कोहबर)

ख. अरिपन चित्र (भूमि से संबंधित)

ग. पट चित्रण (कागज, कपड़ा व कैनवास आदि)

मधुबनी लोक चित्रों में भित्ति चित्र मुख्य रूप से मंगल सूचक मान्यताओं को लेकर चित्रित किया जाता है। इसमें मुख्य रूप से कमल, बाँस, लैला-मजनू, तोता-मैना, मछली, कछुआ आदि को स्थान दिया जाता है। इसके अलावा देवी-देवताओं, राधा-कृष्ण की लीला, राम-सीता की कथा के चित्रों को भी प्रमुखता से दर्शाया जाता है। विवाह के अवसर पर घर के बाहर और भीतर की दीवारों पर रति और कामदेव के चित्र तथा पशु पक्षी के चित्रों को प्रतीक के रूप में दर्शाया जाता है।

कोहबर चित्र की झांकी

मधुबनी चित्र कला के दूसरे रूप में विशेष प्रकार के भिन्न-भिन्न मंगल सूचक का प्रयोग मांगलिक कार्य के शुभवसर पर किया जाता है। यह चित्रित कला कृति विशेष आकर्षक और प्रभावकारी प्रतीत होती है। इसमें मुख्य रूप से पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों, गुड्डे-गुड़ियों, दीप-स्वास्तिक आदि को विशेष रूप से स्थान दिया जाता है।

मधुबनी चित्र कला के तीसरे रूप में समकालीन चित्रकारों द्वारा प्रयोग में लाई जाने वाली शैलियों का इस्तेमाल किया जाता हैं। इसमें परम्परागत शैली से विपरीत कागज, कपड़े, सूट-साड़ी, पेड़-पौधों, चिकनी मिट्टी

के बर्तनों, रेलगाड़ी के डिब्बों आदि पर मधुबनी पेंटिंग अपनी छँटा बिखेर रही है। इसके विषय के अंतर्गत समकालीन विषयों को विशेष रूप से जगह दी जाती है।

इस प्रकार के मधुबनी चित्र कला मांगलिक कार्य के शुभवसर पर किया जाता है।

मधुबनी शैली के चित्रों में चित्रित वस्तुओं का मात्र सांकेतिक स्वरूप दिया जाता है। पहले के चित्र मुख्यत: दीवारों एवं फर्शों पर ही बनाए जाते थे। मगर कुछ वर्षो से कपड़े और कागज पर भी चित्रांकन की प्रवृत्ति काफी बढ़ी हैं। चित्रांकन की सामग्री के नाम पर बांस की कूची और विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक रंग होते हैं। ज्यादातर रंग वनस्पति से प्राप्त किए जाते हैं।

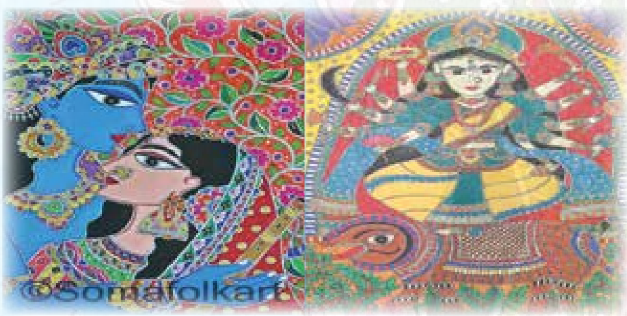

बांस की कूची और विभिन्न प्रकार के प्राकृतिक रंग के इस्तेमाल से बनी मधुबनी चित्र कला

दीवार पर बनी मधुबनी पेंटिंग का सुंदर दृश्य

मधुबनी पेंटिंग को प्राकृतिक रंगों के साथ चित्रित किया जाता है, जिसमें गाय का गोबर और कीचड़ का उपयोग किया जाता है ताकि दीवारों में इन चित्रों को बेहतर बनाया जा सके। इसमें कलाकार अपनी कला में केवल प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल करते हैं, जिसमें हल्दी, पराग या चुना और नीले रंग को नील से इस्तेमाल करते हैं। कुसुम फूल का रस लाल रंग, चंदन या गुलाब के लिए इस्तेमाल किया जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि कलाकारों ने अपने रंग के जरूरतों के मुताबिक विभिन्न प्राकृतिक सामग्रियों का इस्तेमाल बखूबी ढंग से किया है, जो खुद में एक अनूठी कला को दर्शाता है। मधुबनी पेंटिंग को कमरों की बाहरी और आंतरिक दीवारों पर और मारबा पर, विवाह में, उपनायन संस्कार में) और दीपावली जैसे त्यौहार आदि कुछ शुभ अवसरों पर किया जाता हैं। सूर्य और चंद्रमा भी चित्रित किये जाते हैं क्योंकि यह माना जाता है कि वे परिवार में समृद्धि और खुशी लाते हैं।

प्राकृतिक रंगों के इस्तेमाल से बनी सुंदर मधुबनी पेंटिंग

मधुबनी चित्र बनाती हुई लोक चित्रकार

वनों की कटाई की रोकथाम में यह पेंटिंग महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस अद्भुत कला के बारे में यह एक ऐसा तथ्य है, जो इन चित्रों को सबसे अलग बनाता है। मधुबनी कलाकार मधुबनी चित्रों का उपयोग पेड़ों को काटने से रोकने के लिए करते हैं। मधुबनी कला केवल सजावट के लिए ही नहीं है क्योंकि इन चित्रों में से अधिकांश चित्र हिंदू देवताओं को चित्रित करते हैं। कलाकार हिंदू देवताओं के चित्र को पेड़ों पर बनाते हैं, जिसके कारण लोग पेड़ों को काटने से रुक जाते है या फिर उन्होंने पेड़ों को काटना बंद कर दिया है।

पेड़ों पर हिंदू देवी-देवताओं के चित्र बनाती हुई लोक चित्रकार

मधुबनी चित्रकला को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने का श्रेय डब्लू जी आर्चर महोदय को जाता है। साल 1949 में 'मार्ग' पत्रिका में उनके प्रकाशित आलेख से यह चित्रकला का विस्तार देश से विदेश तक हुआ है। साल 1960 में मधुबनी लोक चित्रकला को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति मिली और साल 1961-62 में कागज पर उकेरी गई चित्रकारी ने इसकी भावी भविष्य की दशा-दिशा तय की। आज मधुबनी चित्रकला को अनेक कलाकारों के चित्रकारी ने इसकी लोकप्रियता को विस्तार दिया है। इसके प्रमुख कलाकारों में सिया देवी, कौशल्या देवी, शशि कला देवी, गंगा देवी, भगवती देवी और हाल ही दिवंगत हुई पद्मश्री गोदावारी देवी दत्त आदि महिला कलाकारों के अलावा संतोष कुमार दास, संजू दास, अविनाश करन, कमलेश राय, रौद्री पासवान आदि मुख्य रूप से पुरुष कलाकारों में सरीखे हैं। इन महिला और पुरुष कलाकारों के कलात्मक चित्रकारी ने मिथिला की लोककला को विश्व कला से जोड़ दिया है। आज मधुबनी चित्रकला अपनी स्थानीय परिवेश की सीमा को लांघते हुए देश-विदेश में काफी लोकप्रिय हो रहा है और इसकी प्रदर्शनियाँ आयोजित की जा रही हैं। यही कारण रहा है कि जापान के तोकामाची शहर में मधुबनी पेंटिंग का संग्रहालय भी खोला गया है।

आज मिथिला पेंटिंग चित्रकला के साथ-साथ लोगों के जीविकोपार्जन का साधन बन गया है। देश से लेकर वैश्विक बाज़ार में मिथिला पेंटिंग की मांग बहुतायत संख्या में हो रहा है। लोक कलाकारों को एक-एक पेंटिंग के लिए लाखों रुपए दिए जा रहे हैं। इसकी लोकप्रियता ने मिथिलांचल के लोगों के अजीविका के नए साधन दिए है। आज सरकारें भी 'वोकल फॉर लोकल' के तहत हर क्षेत्र विशेष की कलाकृति को राष्ट्रीय पर पहचान देने का कार्य कर रही हैं। इस पहल से आम से खास लोग भी खासी रूची लेकर मिथिला पेंटिग को हाथों-हाथ ले रहे हैं और अपने घरों की दीवारों को सजा रहे हैं। इसके साथ ही कलाकारों को भी सम्मान दिया जा रहा है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि मिथिला की लोकप्रिय लोक चित्रकलान केवल बिहार का स्वाभिमान और गर्व का प्रतीक नहीं है अपितु भारत का स्वाभिमान और गर्व का प्रतीक है। बिहार का अभिमान 'मिथिला पेंटिंग' के बारे में जितनी जानकारी ली जाए उतनी ही कम पड़ती है। आज इसका विस्तार न केवल भारत तक है बल्कि विदेशी सरजमीं पर भी लोग इस कला का गुणगान कर रहे हैं।

श्री एल.बी. झा
सहायक महाप्रबंधक
उत्तर मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय

वो मैं ही था, कोई और नहीं

जिसने पग पग खाई ठोकर
और मृत्यु पाई जीवन खोकर
जिसने युग का इतिहास लिखा
जिसको कण कण में ईश्वर दिखा

वो मैं ही था कोई और नहीं

मैने लांघे पर्वत सागर
और पार करी कांटों सी डगर
कितने जन्मों चलता ही रहा
फिर भी ना पूरा हुआ सफर

यूं तो पाए कई सिंहासन
संतुष्ट हुआ कब मेरा मन
काटे यूं तो कई पर्वत वन
नहीं काट सका मोह का बंधन

जाने कितने ही युद्ध किए
जाने कितनों में हुआ विजय
लेकिन फिर भी संसार कभी
हो पाया क्या कभी शांतिमय

मैंने मोड़ा नदियों का जल
और काटे अंधाधुन जंगल
लूटी मैंने हर एक दिशा
क्या मिला मुझे होकर पागल

पशु को मैने लाचार किया
पक्षी पर अत्याचार किया
जो जो श्रृष्टि में था अमूल्य
उसका मैने व्यापार किया

कभी बुद्ध के पीछे चला था मैं
कभी कृष्ण को मैने अपनाया
पर मोह पाश में बंधा रहा
कुछ ना मैने अनुभव पाया

जन्मों जन्मों मैं रहा प्यासा
कभी शांत हुई ना जिज्ञासा
वासना के दल दल में गिरकर

बस हाथ लगी तो निराशा
भोगा मैने यूं तो हर भोग

और किया वसुधा का दुरुपयोग
लेकिन जब जब त्यागी तृष्णा
तब तब ही हुआ मुझे आत्मबोध

जब अंत में सबकुछ हार गया
तब उसी वसुधा के द्वार गया
जब त्यागा मैने सब जंजाल
तब अंतर्मन से भार गया।

अनुराग मिश्रा
सहायक प्रबंधक
अग्रणी बैंक कक्ष (क्षेत्रीय कार्यालय जलगाँव)

मीरा बाई और मेड़ता सिटी: प्रेम, भक्ति और साहस की अद्वितीय गाथा

मेड़ता सिटी राजस्थान के नागौर जिले में स्थित एक प्राचीन और ऐतिहासिक शहर है। यह शहर संत और कवयित्री मीरा बाई के जन्मस्थान के रूप में प्रसिद्ध है, जिन्होंने अपनी भक्ति, प्रेम और साहस से इतिहास में एक अमिट छाप छोड़ी। मीरा बाई का जीवन और उनकी कविताएँ आज भी लोगों के दिलों में जीवित हैं और उनकी प्रेरणादायक कथा हमें आध्यात्मिकता, प्रेम और समर्पण का सच्चा अर्थ समझाती हैं।

मीरा बाई का जन्म 1498 ईस्वी में मेड़ता सिटी में राठौड़ राजवंश के एक प्रतिष्ठित परिवार में हुआ था। उनके पिता रत्न सिंह राठौड़ मेड़ता के राजा थे। बचपन से ही मीरा बाई का झुकाव भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति की ओर था। एक बार, जब उन्होंने एक बारात देखी तो उन्होंने अपनी माँ से पूछा कि उनका पति कौन है। उनकी माँ ने मजाक में श्रीकृष्ण की मूर्ति की ओर इशारा किया। इस घटना ने मीरा बाई के जीवन की दिशा बदल दी और उन्होंने श्रीकृष्ण को अपना पति मान लिया। इस प्रकार मीरा बाई के जीवन की भक्ति यात्रा की शुरुआत हुई, जो उनके पूरे जीवन का आधार बनी।

विवाह और संघर्ष:- मीरा बाई का विवाह मेवाड़ के राजा राणा कुम्भा के साथ हुआ। विवाह के पश्चात भी मीरा बाई की भक्ति में कोई कमी नहीं आई और वे श्रीकृष्ण की आराधना में लीन रहीं। उनकी इस अनन्य भक्ति ने उनके ससुराल पक्ष को असंतुष्ट कर दिया। विशेष रूप से उनकी सास और देवर ने उनकी भक्ति को संदेह की दृष्टि से देखा और उन्हें तिरस्कार और प्रताड़ना का सामना करना पड़ा। मीरा बाई का जीवन संघर्ष और साहस का प्रतीक था। वे समाज के रीति-रिवाजों और परिवार की अपेक्षाओं के विपरीत जाकर अपने आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर रहीं। उनकी भक्ति और प्रेम ने उन्हें अद्वितीय बना दिया और वे अपने समय के सामाजिक बंधनों से मुक्त होकर आध्यात्मिक स्वतंत्रता की प्रतीक बनीं।

भक्ति और कविताएँ:- मीरा बाई की कविताएँ और भजन उनके गहन भक्ति भाव और प्रेम को प्रकट करते हैं। उनकी रचनाओं में श्रीकृष्ण के प्रति उनकी अनन्य भक्ति और प्रेम की अभिव्यक्ति होती है। वे अपने भजनों में श्रीकृष्ण के साथ संवाद करती हैं और उनके प्रति अपने प्रेम और समर्पण को व्यक्त करती हैं। मीरा बाई की कविताएँ न केवल धार्मिक अपितु सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण हैं।

उनकी कविताओं में भावनात्मक गहराई और आध्यात्मिक ऊँचाई का अनूठा संगम है। मीरा बाई की भक्ति-भावना और उनकी कविताओं में वर्णित प्रेम ने उन्हें भक्ति साहित्य में अमर बना दिया है। उनकी रचनाएँ आज भी लोगों के हृदयों को छूती हैं और उन्हें आध्यात्मिक मार्ग पर प्रेरित करती हैं।

विष प्रसंग:- मीरा बाई के जीवन में विष का प्रसंग अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रसिद्ध है। उनके ससुराल पक्ष ने उनकी भक्ति और समर्पण से असंतुष्ट होकर उन्हें मारने की योजना बनाई। कहा जाता है कि राणा कुम्भा की अनुपस्थिति में उनके देवर ने उन्हें विष का प्याला भेजा। मीरा बाई ने इसे श्रीकृष्ण का प्रसाद मानकर ग्रहण कर लिया। किंवदंती के अनुसार, विष का प्याला पीने के बावजूद मीरा बाई को कोई हानि नहीं

हुई और यह घटना उनकी भक्ति की शक्ति का प्रमाण मानी जाती है। यह प्रसंग मीरा बाई की आध्यात्मिक शक्ति और उनकी अपार भक्ति का प्रतीक है। विष पीकर भी उनके सुरक्षित रहने की कथा ने उनके प्रति लोगों की श्रद्धा और भी बढ़ा दी। यह घटना बताती है कि सच्ची भक्ति में कितनी शक्ति होती है और कैसे भगवान अपने भक्तों की रक्षा करते हैं।

मीरा बाई के समय का समाज उनके जीवन और विचारों को समझने में असमर्थ था। उन्हें अक्सर आलोचना और तिरस्कार का सामना करना पड़ा। उनके परिवार और ससुराल पक्ष ने भी उनकी भक्ति को समझने और स्वीकार करने से इंकार कर दिया लेकिन मीरा बाई ने समाज की परवाह किए बिना अपने भक्तिमार्ग पर आगे बढ़ने का निर्णय लिया। वे श्रीकृष्ण की भक्ति में लीन रहीं और अपने आध्यात्मिक मार्ग पर अडिग रहीं।

मीरा बाई का साहस और समाज की बंदिशों को तोड़ने का उनका संकल्प उनके व्यक्तित्व का अद्वितीय पहलू है। उन्होंने दिखाया कि सच्ची भक्ति और प्रेम किसी भी सामाजिक बंधन से ऊपर होते हैं। उनका जीवन उन सभी के लिए प्रेरणा स्रोत है जो अपने आध्यात्मिक पथ पर आगे बढ़ना चाहते हैं।

मृत्यु और विरासत:- मीरा बाई की मृत्यु 1547 ईस्वी में द्वारका में हुई, जहाँ उन्होंने अपने जीवन के अंतिम वर्ष बिताए। उनकी मृत्यु के बाद भी उनकी कविताएँ और भजन जीवित रहे और आज भी लोगों के दिलों में बसे हुए हैं। उनकी रचनाएँ भारतीय भक्ति साहित्य की महत्वपूर्ण धरोहर हैं। मीरा बाई का जीवन और उनकी कविताएँ प्रेम, भक्ति और समर्पण की मिसाल हैं। उनके जीवन की प्रेरणादायक कहानियाँ आज भी लोगों को प्रेरित करती हैं और उन्हें अपने आध्यात्मिक मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करती हैं। मीरा बाई का जीवन और उनकी रचनाएँ हमें सिखाती हैं कि सच्ची भक्ति और प्रेम किसी भी बाधा को पार कर सकते हैं और हमें अपने आत्मा की सच्चाई से जोड़ सकते हैं।

मेड़ता सिटी का महत्व:- मेड़ता सिटी केवल मीरा बाई के जन्मस्थान के रूप में ही नहीं, बल्कि उनकी जीवन यात्रा के प्रारंभिक चरणों के गवाह के रूप में भी महत्वपूर्ण है। यह शहर मीरा बाई की भक्ति और समर्पण की प्रेरणा का स्रोत है। यहाँ आज भी उनके जीवन और कार्यों को सम्मानित करने के लिए विभिन्न कार्यक्रम और समारोह आयोजित किए जाते हैं। मेड़ता सिटी में स्थित मीरा बाई का मंदिर और अन्य ऐतिहासिक स्थल इस शहर की सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा हैं और यहाँ आने वाले पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र हैं।

मेड़ता सिटी पहुँचने का मार्ग:- यह स्थान रेल और सड़क मार्ग से जुड़ा है। जोधपुर हवाई अड्डा से दूरी लगभग 120 किलोमीटर है। यहाँ से जयपुर विमानतल भी लगभग 200 किलोमीटर की दूरी पर है।

- विभूति बी. झा,
क्षेत्रीय प्रमुख, जोधपुर.

तुम मुझको लिखना..

जो कह ना सको तुम
व्यथा दिल की
तुम मुझको लिखना

जो समझ ना सके कोई
विपदा मन की
तुम मुझसे कहना

जो समझा ना सके कोई
हँसी में छुपे दर्द को
अकेले में आँसू
तुम बहा लेना
पर तुम लिखना
मत भुलना

अपनी हर व्यथा दिल की
अपनी हर वजह आँसू की
मैं तुम्हारी हर लिखावट को
खुद में समा लूंगा
तुम्हारे आसुओं को
अपनी हर पन्ने की पहचान बना दूंगा
बस तुम लिखना मत भूलना
तुम कहना मत भूलना......

शालू कुमारी
ग्राहक सेवा सहायक
रेलवे कॉलोनी शाखा,
क्षेत्रीय कार्यालय
कटिहार

सफर....

लौटते हैं लोग
फिर पहुंचते हैं
जहां से हुआ था सफर प्रारंभ

सफर
अज्ञात का
अंजान का
बिना किसी सड़क
या पगडंडी का

कोई संग हो
जरूरी नहीं
रास्ता दिखाए कोई
ऐसा हमसफर नहीं

अपने दिए बनकर
बस खोज का प्रण लेकर
चलते हैं

कहीं बीच
डगमगाते है कदम
ना कुछ होने के भय से
कांपते है कदम

नहीं बिसराते
कुछ होने का अहम
पीछे छूट गए
नाम ओहदे
और तृष्णाएं

लौट आते हैं
कहीं बीच मार्ग से
ऐसे कितने सिद्धार्थ

और तब कुम्हला जाता है
कोई खिलता गुलाब
टूटता है कही आस्मां में
तारा . . . . .

दुनिया एक है ।

हवाएं गुजरती है
और छुती है हम सभी को
देश की हवा
दुनियाँ जहान की हवा
अलग अलग नहीं है,

वो गुजरती है
मंदिरों मस्जिदों और गुरुद्वारों से।
गुजरती है
मैले कुचेले गलियों से
सैकडों एकड़ो मे फैले
आलीशान महलों से ।

पूरे ब्रह्मांड मे है
ग्रह तारों पर भी वही है
वहां से भी गुजरती है
जहां अभी पहुंच नही पाया इंसान।
हवा जानती है

दुनियां एक है . . . . .

श्री प्रशांत डोले
मुख्य प्रबंधक - विधि
केन्द्रीय कार्यालय, मुंबई

सामाजिक सहबद्धता : एक विस्तृत विश्लेषण

सामाजिक सहबद्धता का अर्थ है किसी व्यक्ति या समूह का समाज के साथ गहरा जुड़ाव और पारस्परिक संबंध। यह जुड़ाव सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और भावनात्मक स्तर पर हो सकता है। किसी भी समाज की संरचना में सामाजिक सहबद्धता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, क्योंकि यह आपसी सहयोग, सहानुभूति और सामूहिक विकास को बढ़ावा देती है। आज के वैश्विक और तकनीकी युग में सामाजिक सहबद्धता की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो गई है। यह न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि सामुदायिक और राष्ट्रीय स्तर पर भी समाज की स्थिरता और विकास में योगदान देती है।

सामाजिक सहबद्धता का अर्थ और परिभाषा:

सामाजिक सहबद्धता का तात्पर्य उस भावना से है जो व्यक्ति को समाज से जोड़ती है और सामूहिक जीवन के प्रति उत्तरदायी बनाती है। यह एक ऐसा संबंध है जो परिवार, समुदाय, जातीय समूह, धर्म, संगठन, और देश के स्तर पर कार्य करता है।

प्रमुख परिभाषाएँ:

1. एमिल दुर्खीम के अनुसार, ''सामाजिक सहबद्धता'' समाज में सामूहिक चेतना और नैतिक एकता को बनाए रखने की प्रक्रिया है।
2. मैक्स वेबर के अनुसार, ''सामाजिक सहबद्धता'' सामाजिक संबंधों और आपसी क्रियाओं की एक निरंतर प्रक्रिया है, जो समाज को एकजुट रखती है।
3. महात्मा गांधी के विचार में, ''सामाजिक सहबद्धता'' प्रेम, अहिंसा और परस्पर सहयोग के माध्यम से समाज को मजबूत बनाती है।

सामाजिक संबद्धता का महत्व:

सामाजिक संबद्धता व्यक्ति के जीवन में अनेक महत्वपूर्ण भूमिकाएँ निभाती है:

1. **मानसिक और भावनात्मक समर्थन** - जब व्यक्ति किसी समूह से जुड़ा होता है, तो उसे मानसिक और भावनात्मक सहयोग मिलता है। यह सहयोग जीवन की कठिनाइयों को सहने में मदद करता है।
2. **पहचान और आत्मसम्मान** - सामाजिक संबद्धता व्यक्ति को पहचान देती है और उसका आत्म-सम्मान बढ़ाती है।
3. **सामाजिक कौशल का विकास** - समूहों से जुड़ने से संवाद और नेतृत्व कौशल विकसित होते हैं।
4. **सुरक्षा और सहयोग** - व्यक्ति अकेले की बजाय समूह में सुरक्षित महसूस करता है और उसे सहयोग भी प्राप्त होता है।
5. **आर्थिक और व्यावसायिक लाभ** - सामाजिक संबद्धता के माध्यम से व्यक्ति को नए अवसर मिलते हैं, जो करियर और व्यवसाय में सहायक होते हैं।

सामाजिक संबद्धता के प्रकार:

सामाजिक संबद्धता कई रूपों में देखी जा सकती है:

1. **परिवारिक संबद्धता** - माता-पिता, भाई-बहन और रिश्तेदारों के साथ जुड़ाव।
2. **मित्रता संबद्धता** - दोस्तों और सहकर्मियों के साथ संबंध।
3. **धार्मिक संबद्धता** - मंदिर, मस्जिद, चर्च, गुरुद्वारा आदि धार्मिक संस्थाओं से जुड़ाव।
4. **सांस्कृतिक संबद्धता** - कला, संगीत, साहित्य, खेल आदि के माध्यम से समाज से जुड़ाव।
5. **राजनीतिक संबद्धता** - किसी राजनीतिक दल या विचारधारा से संबंध।
6. **व्यावसायिक संबद्धता** - पेशेवर संगठनों, संघों और नेटवर्क से जुड़ाव।

सामाजिक सहबद्धता के घटक:

1. पारिवारिक संबंध:

परिवार समाज की सबसे छोटी इकाई है, जहां सामाजिक सहबद्धता की नींव रखी जाती है। परिवार के सदस्यों के बीच प्रेम, सहयोग और उत्तरदायित्व की भावना से सामाजिक संबंध मजबूत होते हैं।

2. सांस्कृतिक और धार्मिक एकता:

संस्कृति और धर्म सामाजिक सहबद्धता को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। धार्मिक अनुष्ठान, त्यौहार और सांस्कृतिक कार्यक्रम लोगों को जोड़ने का कार्य करते हैं।

3. सामुदायिक सहभागिता:

समाज में विभिन्न समुदायों के बीच सहयोग और सहभागिता सामाजिक सहबद्धता को मजबूत करती है। यह सहकारिता विभिन्न सामाजिक संगठनों, एनजीओ, और स्वयंसेवी समूहों के माध्यम से देखी जा सकती है।

4. नैतिक और सामाजिक मूल्यों का पालन:

ईमानदारी, सहानुभूति, समानता, न्याय और भाईचारा जैसी नैतिकता सामाजिक सहबद्धता को बनाए रखने में मदद करती है। जब समाज के लोग समान मूल्यों का पालन करते हैं, तो वे एक मजबूत सामाजिक ताने-बाने का निर्माण करते हैं।

5. शिक्षा और जागरूकता:

शिक्षा व्यक्ति को समाज के प्रति जिम्मेदार बनाती है। शिक्षित समाज में सामाजिक सहबद्धता अधिक मजबूत होती है क्योंकि लोग एक-दूसरे के अधिकारों और कर्तव्यों को समझते हैं।

6. आर्थिक समानता और समावेशिता:

आर्थिक असमानता सामाजिक विभाजन को जन्म देती है। जब समाज में आर्थिक अवसर समान रूप से वितरित किए जाते हैं, तो सामाजिक सहबद्धता मजबूत होती है।

7. राष्ट्रीय एकता और देशभक्ति:

राष्ट्र के प्रति प्रेम और सम्मान सामाजिक सहबद्धता को बढ़ाता है। जब लोग राष्ट्रीय हित को प्राथमिकता देते हैं, तो समाज अधिक संगठित और समृद्ध बनता है।

सामाजिक सहबद्धता के लाभ:

1. सामाजिक स्थिरता:

जब समाज में सभी लोग एक-दूसरे के साथ सह-अस्तित्व में रहते हैं, तो समाज में स्थिरता बनी रहती है।

2. आपसी सहयोग और विकास:

सामाजिक सहबद्धता से लोग एक-दूसरे की मदद करने के लिए प्रेरित होते हैं, जिससे समाज का समग्र विकास होता है।

3. अपराध में कमी:

एकजुट समाज में अपराध दर कम होती है क्योंकि लोग नैतिक मूल्यों का पालन करते हैं और एक-दूसरे की भलाई के लिए कार्य करते हैं।

4. मानसिक और भावनात्मक संतुलन:

सामाजिक जुड़ाव से व्यक्ति को मानसिक और भावनात्मक स्थिरता मिलती है, जिससे वह तनावमुक्त और खुशहाल रहता है।

5. राष्ट्रीय और वैश्विक समृद्धि:

सामाजिक सहबद्धता न केवल राष्ट्रीय बल्कि वैश्विक स्तर पर भी शांति और सहयोग को बढ़ावा देती है।

आधुनिक युग में सामाजिक सहबद्धता की चुनौतियाँ:

1. डिजिटल युग में सामाजिक अलगाव:

सोशल मीडिया और डिजिटल तकनीक ने भले ही लोगों को जोड़ा है, लेकिन यह वास्तविक सामाजिक संबंधों को कमजोर भी कर रही है।

2. जाति, धर्म और वर्गभेद:

भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में जातीय, धार्मिक और आर्थिक भेदभाव सामाजिक सहबद्धता के लिए बड़ी चुनौती है।

3. उपभोक्तावाद और व्यक्तिगत स्वार्थ:

आज के उपभोक्तावादी समाज में लोग व्यक्तिगत लाभ को प्राथमिकता देने लगे हैं, जिससे सामाजिक सहयोग की भावना कमजोर हो रही है।

4. राजनीतिक और वैचारिक विभाजन:

राजनीतिक विचारधाराओं में मतभेद समाज में टकराव और विभाजन पैदा कर सकते हैं, जिससे सामाजिक सहबद्धता प्रभावित होती है।

सामाजिक सहबद्धता को बढ़ाने के उपाय:

1. नैतिक और सामाजिक शिक्षा को बढ़ावा देना:

विद्यालयों और कॉलेजों में नैतिकता और सामाजिक मूल्यों की शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि युवाओं में सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित हो।

2. सामुदायिक विकास कार्यक्रम:

सामुदायिक स्तर पर सामाजिक सेवा, सांस्कृतिक गतिविधियों और जनसहयोग कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।

3. डिजिटल और सोशल मीडिया का सकारात्मक उपयोग:

सोशल मीडिया का उपयोग सामाजिक सद्भाव और जागरूकता बढ़ाने के लिए किया जाना चाहिए, न कि नफरत और गलत सूचनाओं के प्रसार के लिए।

4. समानता और समावेशिता को बढ़ावा देना:

सरकार और समाज को मिलकर जाति, धर्म, लिंग और आर्थिक आधार पर होने वाले भेदभाव को समाप्त करने के प्रयास करने चाहिए।

5. पारिवारिक और सामाजिक संबंधों को मजबूत करना:

परिवार और समाज के बीच पारस्परिक संवाद और सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए ताकि लोग एक-दूसरे से भावनात्मक रूप से जुड़े रहें।

सामाजिक संबद्धता के प्रभाव:

1. **सकारात्मक प्रभाव:**
   - ❖ मानसिक स्वास्थ्य में सुधार
   - ❖ समाज में सक्रिय भागीदारी
   - ❖ नेतृत्व क्षमता का विकास
   - ❖ सामुदायिक सहयोग और परस्पर विश्वास
2. **नकारात्मक प्रभाव:**
   - ❖ गलत समूहों से जुड़ने का खतरा (जैसे, नकारात्मक संगठनों से संबंध)
   - ❖ सामाजिक दबाव और तनाव
   - ❖ व्यक्तिगत स्वतंत्रता का ह्रास

सामाजिक संबद्धता व्यक्ति के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह न केवल भावनात्मक और मानसिक रूप से सहायक होती है, बल्कि व्यक्ति को सामाजिक और व्यावसायिक रूप से भी मजबूत बनाती है। हालाँकि, व्यक्ति को यह ध्यान रखना चाहिए कि वह सकारात्मक और उत्पादक समूहों से जुड़ा रहे ताकि उसका विकास सही दिशा में हो सके। सामाजिक सहबद्धता किसी भी समाज की मजबूती और प्रगति का आधार होती है। यह केवल सामाजिक स्थिरता ही नहीं, बल्कि व्यक्तिगत और सामूहिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आज के बदलते समय में, हमें सामाजिक सहबद्धता को बढ़ावा देने के लिए नैतिक मूल्यों, शिक्षा, समानता और सहयोग को प्राथमिकता देनी होगी।

यदि समाज के सभी लोग मिलकर सहकार और सहानुभूति की भावना से कार्य करें, तो एक सशक्त, शांतिपूर्ण और प्रगतिशील समाज का निर्माण संभव है।

सौरभ गुप्ता
सहायक प्रबंधक
सिविल लाइंस शाखा, आगरा

ग्राहक संतोष और मूल्य संवर्धन

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में, ग्राहक संतोष और मूल्य संवर्धन किसी भी व्यवसाय की सफलता के दो मुख्य स्तंभ हैं। डिजिटल क्रांति, उपभोक्ता जागरूकता और व्यक्तिगत अनुभव की बढ़ती मांग ने व्यवसायों को नए तरीके अपनाने के लिए प्रेरित किया है। ग्राहक संतोष का तात्पर्य है ग्राहकों की आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को समझना और उन्हें पूरा करना, जबकि मूल्य संवर्धन का अर्थ है ग्राहकों को उनकी उम्मीदों से अधिक लाभ और सेवाएं प्रदान करना। यह लेख इन दोनों पहलुओं पर गहराई से चर्चा करेगा और यह समझाएगा कि कैसे ये किसी व्यवसाय की सफलता को सुनिश्चित करते हैं। ग्राहक संतोष और मूल्य संवर्धन किसी भी व्यवसाय की सफलता के मुख्य आधार हैं। एक व्यवसाय तभी लंबे समय तक टिक सकता है, जब वह अपने ग्राहकों को संतुष्ट रखने के साथ-साथ उन्हें अतिरिक्त मूल्य प्रदान करे। यह केवल उत्पाद या सेवा तक सीमित नहीं है, बल्कि ग्राहकों के साथ लंबे समय तक संबंध बनाए रखने का माध्यम है।

ग्राहक संतोष:-

ग्राहक संतोष का सीधा संबंध व्यवसाय और उसके ग्राहकों के बीच के अनुभव से है। यह ग्राहकों की अपेक्षाओं को समझने, उनकी जरूरतों को पूरा करने और उन्हें बेहतर सेवा प्रदान करने की प्रक्रिया है।

ग्राहक संतोष का महत्व: ग्राहक संतुष्टि केवल उत्पाद या सेवा की गुणवत्ता तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें ग्राहक के साथ किया गया संपूर्ण अनुभव शामिल होता है। यदि ग्राहक संतुष्ट होता है, तो वह न केवल बार-बार खरीदारी करता है बल्कि अपने नेटवर्क में सकारात्मक प्रचार भी करता है।

1. **ग्राहक वफादारी:** एक संतुष्ट ग्राहक बार-बार उसी व्यवसाय से खरीदारी करता है।

2. **सकारात्मक प्रचार:** संतुष्ट ग्राहक व्यवसाय की अच्छी छवि बनाते हैं और दूसरों को भी इसकी सिफारिश करते हैं।

3. **प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त:** ग्राहक संतोष एक व्यवसाय को प्रतिस्पर्धा में बढ़त प्रदान करता है।

4. **राजस्व वृद्धि:** संतुष्ट ग्राहक लंबे समय तक व्यवसाय से जुड़े रहते हैं, जिससे राजस्व में वृद्धि होती है।

ग्राहक संतोष को प्रभावित करने वाले कारक:

1. **उत्पाद की गुणवत्ता:** उत्पाद की गुणवत्ता ग्राहकों की अपेक्षाओं को पूरा करती है तो वे संतुष्ट होते हैं।

2. **सेवा की समयबद्धता:** ग्राहक को सही समय पर सेवा प्रदान करना महत्वपूर्ण है।

3. **संचार और पारदर्शिता:** व्यवसाय और ग्राहक के बीच स्पष्ट और प्रभावी संचार संतोष बढ़ाता है।

4. **फीडबैक:** ग्राहकों से फीडबैक लेना और उसे लागू करना ग्राहक संतोष में सुधार करता है।

ग्राहक संतोष बढ़ाने के उपाय:

1. **ग्राहकों को समझना:** ग्राहकों की जरूरतों और अपेक्षाओं को समझकर उत्पाद और सेवाओं को अनुकूलित करना।

2. **नवाचार और तकनीक का उपयोग:** नई तकनीकों का उपयोग करके सेवा को तेज और बेहतर बनाना।

3. **कर्मचारियों का प्रशिक्षण:** कर्मचारियों को ग्राहक सेवा के लिए प्रशिक्षित करना।

4. **समस्या समाधान:** ग्राहकों की शिकायतों को जल्दी और प्रभावी तरीके से हल करना।

मूल्य संवर्धन: मूल्य संवर्धन का अर्थ है किसी उत्पाद या सेवा में ऐसे तत्व जोड़ना जो उसे ग्राहक के लिए अधिक उपयोगी और आकर्षक बनाते हैं। यह नवाचार, सेवा की गुणवत्ता, कस्टमर सपोर्ट, डिजिटल

टूल्स, और व्यक्तिगत अनुभव के रूप में हो सकता है।

मूल्य संवर्धन का महत्व:

1. **ग्राहकों का विश्वास जीतना:** जब ग्राहक को उम्मीद से अधिक मूल्य मिलता है, तो वे व्यवसाय के प्रति वफादार होते हैं।
2. **ब्रांड छवि सुधारना:** मूल्य संवर्धन से व्यवसाय की छवि बेहतर होती है।
3. **नई संभावनाएं बनाना: यह नए ग्राहकों को आकर्षित करने और पुराने ग्राहकों को बनाए रखने में मदद करता है।**

मूल्य संवर्धन के प्रकार:

1. **उत्पाद आधारित मूल्य संवर्धन:**
   - उत्पाद में नई सुविधाओं को जोड़ना।
   - गुणवत्ता में सुधार करना।
2. **सेवा आधारित मूल्य संवर्धन:**
   - व्यक्तिगत सेवा प्रदान करना।
   - ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाना।
3. **मूल्य आधारित संवर्धन:**
   - प्रतिस्पर्धात्मक कीमतों पर बेहतर गुणवत्ता प्रदान करना।

मूल्य संवर्धन के उदाहरण:

1. **ई-कॉमर्स:** अमेज़न और फ्लिपकार्ट जैसी कंपनियां तेज डिलीवरी और ग्राहक-अनुकूल रिटर्न पॉलिसी के माध्यम से मूल्य संवर्धन करती हैं।
2. **बैंकिंग सेक्टर:** मोबाइल बैंकिंग और 24/7 ग्राहक सेवा जैसी सुविधाएं मूल्य संवर्धन के अच्छे उदाहरण हैं।
3. **खुदरा उद्योग:** डिस्काउंट, ऑफर, और लॉयल्टी प्रोग्राम के माध्यम से ग्राहक को अतिरिक्त लाभ प्रदान किया जाता है।

ग्राहक संतोष और मूल्य संवर्धन के बीच संबंध:

ग्राहक संतोष और मूल्य संवर्धन एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। जब कोई व्यवसाय मूल्य संवर्धन करता है, तो यह ग्राहक संतोष को भी बढ़ाता है। उदाहरण के लिए: यदि कोई बैंक ग्राहक को मुफ्त एटीएम सेवा और कैशबैक ऑफर प्रदान करता है, तो ग्राहक संतुष्ट होता है और लंबे समय तक बैंक से जुड़ा रहता है। मूल्य संवर्धन के जरिए ग्राहक को व्यक्तिगत अनुभव दिया जाए, तो उनकी वफादारी बढ़ती है।

ग्राहक संतोष और मूल्य संवर्धन को बढ़ाने की रणनीतियां:

1. **ग्राहकों की जरूरतों को पहचानें:**

ग्राहकों की जरूरतों को समझकर उनके अनुसार उत्पाद और सेवाएं प्रदान करें।

2. **नवाचार पर ध्यान दें:**

तकनीक और नवाचार का उपयोग करके उत्पादों और सेवाओं में सुधार करें।

3. **फीडबैक सिस्टम विकसित करें:**

ग्राहकों से नियमित रूप से फीडबैक लें और उनकी राय के आधार पर बदलाव करें।

4. **व्यक्तिगत अनुभव प्रदान करें:**

ग्राहकों को व्यक्तिगत रूप से समझें और उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सेवा प्रदान करें।

5. **लागत-प्रभावी समाधान दें:**

ग्राहकों को उनकी लागत के मुकाबले अधिक मूल्य प्रदान करें।

भारत में ग्राहक संतोष और मूल्य संवर्धन के उदाहरण:

1. **बैंकिंग सेक्टर:** भारतीय बैंक जैसे एसबीआई, एचडीएफसी और आईसीआईसीआई ने डिजिटल बैंकिंग, 24/7 ग्राहक सेवा और आकर्षक ब्याज दरों के जरिए ग्राहक संतोष और मूल्य संवर्धन किया है।
2. **ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म:** अमेज़न, फ्लिपकार्ट और मिंत्रा ने तेज डिलीवरी, कस्टमाइज्ड ऑफर्स और लॉयल्टी प्रोग्राम के जरिए ग्राहकों को बेहतर अनुभव दिया है।
3. **खुदरा क्षेत्र:** बिग बाजार और डीमार्ट जैसे ब्रांड्स ने सस्ती कीमतों पर उच्च गुणवत्ता वाले उत्पाद और छूट प्रदान करके मूल्य संवर्धन किया है।
4. **हॉस्पिटैलिटी सेक्टर:** ओयो और ताज होटल्स ने कस्टमाइज्ड पैकेज और बेहतरीन सेवाओं के जरिए ग्राहकों को संतुष्ट किया है।

उभरते हुए व्यवसाय और रणनीतियाँ:

1. **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) आधारित ग्राहक सेवा:**
   - AI चैटबॉट और वर्चुअल असिस्टेंट 24/7 ग्राहक सहायता प्रदान करते हैं।

- डेटा विश्लेषण के माध्यम से व्यक्तिगत ऑफ़र और सिफारिशें दी जाती हैं।
- ग्राहक की जरूरतों को पहले से समझकर उन्हें बेहतर अनुभव देता है।

2. **हाइपर-पर्सनलाइजेशन:**
   - ग्राहकों की पसंद और व्यवहार के अनुसार सेवाएं और उत्पाद प्रदान करना।
   - डेटा एनालिटिक्स और मशीन लर्निंग के माध्यम से व्यक्तिगत ऑफ़र और कस्टमाइज़्ड समाधान देना।

3. **ओमनीचैनल सपोर्ट :**
   - ग्राहक अब कई प्लेटफार्मों (वेबसाइट, मोबाइल ऐप, सोशल मीडिया, फोन कॉल) के माध्यम से जुड़ते हैं।
   - एकीकृत संचार प्रणाली से ग्राहकों को एक समान अनुभव मिलता है।

4. **सब्सक्रिप्शन मॉडल और लॉयल्टी प्रोग्राम:**
   - कंपनियां सब्सक्रिप्शन सेवाओं (Netflix, Amazon Prime) के माध्यम से ग्राहकों को लंबे समय तक जोड़े रखती हैं।
   - लॉयल्टी प्रोग्राम (पॉइंट सिस्टम, कैशबैक, एक्सक्लूसिव डील्स) ग्राहक को बार-बार खरीदारी के लिए प्रेरित करते हैं।

5. **ग्रीन और सस्टेनेबल बिजनेस मॉडल:**
   - पर्यावरण-अनुकूल उत्पादों और सेवाओं की मांग बढ़ रही है।
   - कंपनियां अब बायोडिग्रेडेबल पैकेजिंग, सस्टेनेबल सोर्सिंग और ग्रीन एनर्जी का उपयोग कर रही हैं।

6. **डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन और ऑटोमेशन:**
   - क्लाउड कंप्यूटिंग, ERP सॉफ्टवेयर, और IoT आधारित समाधान व्यापार को तेज़ और कुशल बना रहे हैं।
   - ग्राहकों को तेजी से सेवा देने के लिए स्वचालित प्रक्रिया अपनाई जा रही हैं।

7. **अनुभवात्मक मार्केटिंग:**
   - कंपनियांग्राहकोंकोइमर्सिव(immersive)अनुभवप्रदान कर रही हैं।
   - वर्चुअल रियलिटी और ऑगमेंटेड रियलिटी आधारित शॉपिंग अनुभव तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं।

8. **स्वास्थ्य और वेलनेस सेक्टर का उदय:**
   - फिटनेस ऐप, ऑर्गेनिक फूड, और मेंटल हेल्थ सेवाओं की मांग बढ़ रही है।
   - वेलनेस कंसल्टिंग और ऑनलाइन हेल्थ कोचिंग एक नया व्यवसाय मॉडल बन गया है।

9. **सोशल कॉमर्स और इन्फ्लूएंसर मार्केटिंग:**
   - सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स (Instagram, Facebook, YouTube) के जरिए ब्रांड सीधे ग्राहकों से जुड़ रहे हैं।
   - माइक्रो और नैनो-इन्फ्लूएंसर ग्राहकों के निर्णय को प्रभावित कर रहे हैं।

10. **ग्राहक प्रतिक्रिया और निरंतर सुधार:**
    - कंपनियां नियमित रूप से ग्राहकों की प्रतिक्रिया (feedback) एकत्र कर रही हैं और अपने उत्पादों और सेवाओं को अपडेट कर रही हैं।
    - ग्राहक अनुभव को बेहतर बनाने के लिए NPS (NetPromoter Score) और CSAT (Customer Satisfaction Score) जैसे मेट्रिक्स का उपयोग किया जा रहा है।

सुझाव:

1. ग्राहकों की अपेक्षाओं को समझें और उनसे अधिक प्रदान करें।
2. उत्पाद और सेवाओं में लगातार नवाचार करें।
3. ग्राहकों से संवाद बनाए रखें और उनकी समस्याओं का समाधान करें।
4. ग्राहकों को विशेष महसूस कराने के लिए व्यक्तिगत अनुभव प्रदान करें।

भविष्य के लिए रणनीतियाँ:

- ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाएं और उनकी जरूरतों को प्राथमिकता दें।
- डिजिटल और टेक्नोलॉजी-ड्रिवन समाधान विकसित करें ताकि ग्राहक को निर्बाध सेवा मिले।
- नवाचार और सतत सुधार की मानसिकता अपनाएं ताकि व्यवसाय समय के साथ प्रासंगिक बना रहे।
- सस्टेनेबिलिटी और सामाजिक उत्तरदायित्व को व्यावसायिक रणनीति का हिस्सा बनाएं।

ग्राहक संतोष और मूल्य संवर्धन का सही संतुलन बनाए रखना किसी भी व्यवसाय को न केवल लाभदायक बनाता है, बल्कि उसे बाजार में

प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त भी प्रदान करता है। आज के प्रतिस्पर्धी युग में, किसी भी व्यवसाय की सफलता ग्राहक संतुष्टि और मूल्य संवर्धन पर निर्भर करती है। ग्राहक अब केवल उत्पाद या सेवा की गुणवत्ता से संतुष्ट नहीं होते, बल्कि वे व्यक्तिगत अनुभव, नवाचार और अतिरिक्त मूल्य की भी अपेक्षा करते हैं। इस बदलते परिवेश में, कई नए व्यवसाय मॉडल और उद्योग उभर रहे हैं जो ग्राहकों को बेहतर सेवाएं प्रदान करने और उनके अनुभव को समृद्ध बनाने पर केंद्रित हैं। ग्राहक संतुष्टि और मूल्य संवर्धन पर केंद्रित व्यवसाय मॉडल न केवल ग्राहकों को एक बेहतर अनुभव प्रदान करते हैं, बल्कि वे लंबे समय तक स्थायी रूप से लाभदायक भी बने रहते हैं। व्यवसायों को चाहिए कि वे नवीनतम तकनीकों और ग्राहक-केंद्रित रणनीतियों को अपनाकर अपने उत्पादों और सेवाओं में लगातार सुधार करें। ग्राहक संतुष्टि और मूल्य संवर्धन में नवाचार और तकनीक की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यवसायों को लगातार बदलते उपभोक्ता व्यवहार को समझकर नई रणनीतियाँ अपनानी होंगी। जो कंपनियां ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण अपनाएंगी, वही भविष्य में टिकाऊ और सफल होंगी। यदि कोई व्यवसाय दीर्घकालिक सफलता चाहता है, तो उसे केवल उत्पाद बेचने के बजाय ग्राहकों को मूल्य प्रदान करने और उनके अनुभव को समृद्ध करने पर ध्यान देना चाहिए। जो कंपनियां ग्राहक के अनुभव को प्राथमिकता देंगी और उनकी जरूरतों को समझकर मूल्य जोड़ेंगी, वही भविष्य में सफलता की नई ऊंचाइयों को छू सकेंगी।

दीपिका गुप्ता - प्रबंधक
सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया
सिविल लाइंस शाखा, आगरा

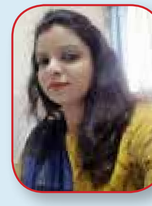

तु नहीं तो कुछ भी नहीं

पिछली ज़िंदगी का बाकी हिसाब रहा होगा
जिसे सीने में सजाया था तमन्ना समझ कर
वो तेरा ही कोई अज़ाब रहा होगा.

कितना महक रहा है आज भी ये सिरहाना मेरा
वो तेरा सर नहीं गुलजार-ए-गुलाब रहा होगा

वैसे तो हसरत कुछ और थी दिल की पर
तेरा यूं जाना भी कोई सवाब रहा होगा.

मैं जाऊंगा तो राख छोड़ जाऊंगा
देखने वालों की नज़रों में कुछ ख्वाब छोड़ जाऊंगा

ये चांद जमीन पर लाकर क्यूं नूर कम करें उसका
अश्क नदी में आया है आज यही काफी है

आपका हाथ हाथ में नहीं आया उसका गम नहीं हमको
आपका चेहरा नजर आया यही काफी है.

हाथ बढ़ाओ सनम जान मागों न हमारी
तुम्हारा दोस्त बनकर रह जाना है, दुश्मनी से भारी

तूं तूफान बनकर आ, मैं अब्र हो जाऊं
एक पुकार से तेरी बेसब्र हो जाऊं.

तूझे भूल तो सकता हूं पर भुलाना नहीं चाहता
अपने दिल को मैं पूरा अपनाना नहीं चाहता.

आपकी निगाहें दीवाना करती रहीं, दिल ये दीवाना होता रहा,
जब-जब देखी सूरत अपनी, हर दर्द हमारा सोता रहा.

वो चैन से सोते हैं हमको तो नींद ही नहीं आती
मीर क्यों इन यादों को बेबफाई नहीं आती

इक बरस गुजरा था तेरी बाहों में कभी,
कई बरस बरसे पर तेरी महक ना धुली

कि रात तन्हा न हो तो वो रात नहीं रहती
तूं न हो जिसमें, मुझमें वो याद नहीं रहती.

कुछ यूं पिरोए लम्हें हमने अपने दिल की डोर पे
कि हर मंजिल जिंदगी हो गई,
कभी तेरी याद हो गई, कभी शायरी हो गई.

यूं ज़रूरत तो नहीं मेरे इश्क को तेरी मोहब्बत की,
ज़िंदगी में वैसे ही अभी खलल बहुत हैं.
पर जो दिल है ना मेरा, ये नादान बहुत है.

हर्ष वर्धन
सहायक प्रबंधक (सू.प्रौ.)
सूचना एवं प्रौद्योगिकी विभाग, केन्द्रीय कार्यालय

दिनांक 14 अक्टूबर 2024 को केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां.

दिनांक 14 अक्टूबर 2024 को केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां.

दिनांक 14 अक्टूबर 2024 को केन्द्रीय कार्यालय में आयोजित हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां.

राजभाषा गतिविधियां

कार्यपालक निदेशक महोदय श्री विवेक वाही के क्षेत्रीय कार्यालय कोयम्बत्तूर दौरे पर विभिन्न व्यावसायिक तथा बैंकिंग विषयों पर चर्चा के साथ बैंकिंग व्यवसाय के पोषक के रूप में राजभाषा के महत्व को रेखांकित करते हुए, कार्यपालक निदेशक महोदय द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन विषयक महत्वपूर्ण बिंदु एवं हिंदी टिप्पण के पोस्टर का विमोचन किया गया.

दिनांक 24.12.2024 को आयोजित दिल्ली बैंक नराकास की बैठक में आंचलिक कार्यालय दिल्ली को तृतीय पुरस्कार एवं क्षेत्रीय कार्यालय दक्षिण की ई-पत्रिका सेन्ट्रल अभिव्यक्ति के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ.

23.09.2024, सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया, तिरुवारूर शाखा को नराकास, तिरुवारूर के नराकास शील्ड योजना के अंतर्गत उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया.

दिनांक 23 दिसम्बर, 2024 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), गुवाहाटी के छमाही बैठक में आंचलिक कार्यालय, गुवाहाटी को वित्तीय वर्ष 2023-24 के दौरान राजभाषा के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य निष्पादन के लिए प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया है.

बैंक नराकास, मुंबई द्वारा मुंबई महानगर आंचलिक कार्यालय को वर्ष 2023-24 के लिए राजभाषा शील्ड प्रथम पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय सोलापुर को राजभाषा के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए वर्ष 2023-24 में नराकास का द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया.

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति गांधीधाम द्वारा आयोजित छमाही नराकास बैठक में हमारे गांधीधाम शाखा (जामनगर क्षेत्र) को द्वितीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

नराकास जामनगर द्वारा वर्ष 2023-24 में राजभाषा नीति के सफल कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय जामनगर को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया.

राजभाषा गतिविधियां

क्षेत्रीय कार्यालय त्रिवेन्द्रम, कोल्लम शाखा को नराकास कोल्लम के नराकास शील्ड योजना के अंतर्गत उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया.

क्षेत्रीय कार्यालय त्रिची, पांडिचेरी शाखा को नराकास, पुदुच्चेरी के नराकास शील्ड योजना के अंतर्गत उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया.

नराकास (बैंक), वाराणसी के तत्वावधान में चल बैजयंती शील्ड प्रतियोगिता के अंतर्गत क्षेत्रीय कार्यालय वाराणसी को राजभाषा में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु तृतीय पुरस्कार प्रादान किया गया.

दिनांक 29 नवंबर 2024 को नराकास धनबाद की छमाही बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय धनबाद को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त हुआ.

बैंक नराकास लुधियाना के तत्वावधान में पंजाब नैशनल बैंक अंचल कार्यालय द्वारा आयोजित राजभाषा एवं सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में क्षेत्रीय कार्यालय लुधियाना को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ.

बैंक नराकास जयपुर के तत्वावधान में क्षेत्रीय कार्यालय जयपुर द्वारा टैगोर पब्लिक स्कूल अंबाबाड़ी एवं टीवीबी गर्लस पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल अंबाबाड़ी के विद्यार्थियों हेतु लोक नृत्य प्रतियोगिता एवं जुड़ाव संस्कृति का आयोजन किया गया.

ए.आई.: एक महान आविष्कार या एक शापित भविष्य?

परिचय

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (ए.आई.) ने पिछले कुछ दशकों में अद्वितीय विकास किया है और आज हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। चाहे वह स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा, विज्ञान, या व्यवसाय क्षेत्र हो, ए.आई. ने हर जगह अपनी पैठ बना ली है। यह तकनीकी प्रगति अपनी विशेषताओं और क्षमताओं के कारण एक महान आविष्कार के रूप में उभरी है, लेकिन इसके साथ ही कुछ लोग इसे भविष्य के लिए खतरे के रूप में भी देखते हैं। यह बहस अब अधिक बढ़ गई है कि ए.आई. क्या एक महान आविष्कार है या यह भविष्य के लिए एक शापित समस्या बन सकता है।

ए.आई. का महान आविष्कार के रूप में योगदान

1. **स्वास्थ्य देखभाल में सुधार:** ए.आई. ने चिकित्सा क्षेत्र में क्रांति ला दी है। रोबोटिक सर्जरी, इमेजिंग तकनीक, और डेटा एनालिटिक्स की मदद से डॉक्टर अब तेजी से और सटीक रूप से बीमारियों का निदान कर पा रहे हैं। इसके अलावा, ए.आई. दवाओं के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जिससे नए उपचारों की खोज में तेजी आई है।

2. **शिक्षा में उन्नति:** शिक्षा के क्षेत्र में भी ए.आई. ने न सिर्फ छात्रों की सीखने की क्षमता को बढ़ाया है, बल्कि शिक्षकों के लिए भी कार्यों को सरल और प्रभावी बना दिया है। व्यक्तिगत ट्यूटरिंग, स्मार्ट क्लासरूम, और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस-आधारित शैक्षिक ऐप्लिकेशन्स छात्रों की सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बना रहे हैं।

3. **व्यवसायों में सुधार:** ए.आई. का इस्तेमाल व्यापार में कार्यों को स्वचालित करने और निर्णय लेने में सहायता प्रदान करने के लिए किया जा रहा है। इसके माध्यम से कंपनियां अपने ग्राहकों को अधिक व्यक्तिगत सेवा प्रदान कर सकती हैं और अपने उत्पादों तथा सेवाओं को अधिक सटीकता से लक्षित कर सकती हैं। इसके अलावा, ए.आई. के जरिए डेटा विश्लेषण से बिजनेस स्ट्रैटेजी को बेहतर तरीके से तय किया जा सकता है।

4. **परिवहन और सुरक्षा:** ए.आई. का उपयोग स्वचालित कारों में किया जा रहा है, जिससे सड़क सुरक्षा में सुधार हो सकता है। ए.आई. की मदद से ट्रैफिक दुर्घटनाओं में कमी आ सकती है और वाहन तेज़, सुरक्षित और अधिक कुशल हो सकते हैं। इसके अलावा, यह साइबर सुरक्षा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, जहां यह नेटवर्क हमलों और डेटा उल्लंघनों का पूर्वानुमान करने में मदद करता है।

ए.आई. का एक शापित भविष्य के रूप में खतरा

1. **रोजगार में कमी:** ए.आई. का एक बड़ा नकरात्मक प्रभाव यह हो सकता है कि यह मानव श्रमिकों की जगह ले सकता है। स्वचालन की बढ़ती प्रक्रिया से कई उद्योगों में नौकरी के अवसर घट सकते हैं। विशेष रूप से, जैसे-जैसे ए.आई. तकनीक में सुधार होगा, वैसे-वैसे मानव श्रम की आवश्यकता भी कम हो सकती है, जिससे बेरोजगारी की दर में वृद्धि हो सकती है।

2. **निजता और सुरक्षा की समस्याएं:** ए.आई. द्वारा डेटा संग्रहण और निगरानी की प्रक्रिया ने निजता के उल्लंघन की समस्याओं को जन्म दिया है। यदि इसका गलत उपयोग किया जाए, तो

यह नागरिकों की व्यक्तिगत जानकारी की चोरी का कारण बन सकता है। इसके अलावा, यदि ए.आई. सिस्टम हैक हो जाएं या गलत तरीके से काम करें, तो इसका परिणाम गंभीर हो सकता है, जैसे कि बैंकिंग धोखाधड़ी, व्यक्तिगत सुरक्षा खतरे, और साइबर हमले।

3. **मानवता पर नियंत्रण खोने का डर:** एक बड़ी चिंता यह है कि ए.आई. सिस्टम इतनी शक्ति प्राप्त कर सकते हैं कि वे मानव नियंत्रण से बाहर हो सकते हैं। यदि ए.आई. प्रणाली स्वायत्त रूप से निर्णय लेने में सक्षम हो जाती है, तो यह भविष्य में मानवों के खिलाफ जा सकती है, जिससे एक पूरी नई तरह की आपदा का जन्म हो सकता है। कई वैज्ञानिक और तकनीकी विशेषज्ञ इसे लेकर चिंतित हैं कि अगर ए.आई. प्रणाली के पास अत्यधिक शक्तियां आ गईं, तो इसका गलत इस्तेमाल हो सकता है।

4. **नैतिक और सामाजिक समस्याएं:** ए.आई. के निर्णय और कार्य पूरी तरह से मानवीय मूल्य और नैतिकता पर निर्भर नहीं होते। यह किसी भी प्रणाली के लिए बड़ी चिंता का विषय हो सकता है, खासकर जब ए.आई. को युद्ध, सुरक्षा, या मानवता से जुड़े अहम फैसले लेने का जिम्मा सौंपा जाए। इससे सामाजिक असमानताएं बढ़ सकती हैं और सत्ता की एक छोटी सी श्रेणी द्वारा ए.आई. का गलत इस्तेमाल हो सकता है।

निष्कर्ष

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस निस्संदेह एक शक्तिशाली और प्रभावी तकनीक है, जिसने हमारे जीवन के कई पहलुओं को सुधारने का वादा किया है। हालांकि, इसके साथ जुड़े खतरे भी उतने ही गंभीर हैं। यह हमारे लिए यह समझना और नियंत्रित करना महत्वपूर्ण है कि हम इस तकनीक का इस्तेमाल किस तरह करते हैं। इसके फायदे और खतरों दोनों को ध्यान में रखते हुए, यह कह सकते हैं कि ए.आई. एक महान आविष्कार हो सकता है, बशर्ते इसे जिम्मेदारी से और मानवता के भले के लिए उपयोग किया जाए।

लोकेश टांक
सहायक प्रबंधक
मुंबई महानगर, आंचलिक कार्यालय

सफलता लक्ष्य नहीं, अपितु पथ है

हम सभी हमारे जीवन में सफलता के प्रति कार्यरत हैं, हम सभी उस एक दिन की प्रतीक्षा में हैं, जब हमारे इच्छानुरूप हमें वह पद, वस्तु मिलेगी और हमारे सारे दु:ख स्वत: समाप्त हो जाएगें. परंतु हमारे जीवन में ऐसे कई पल आए जब हमने अपने मनवांछित लक्ष्य को प्राप्त किया. हमें प्रसन्नता होती है परंतु वह क्षणिक होती है. जैसे-जैसे समय बीतता जाता है. जो कभी हमारा सपना था वह रोजमर्रा के कामकाज का हिस्सा बन जाता है. और जो चीजें हमें कभी मेहनत करने के लिए प्रेरित करती थीं. वह हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन जाने पर नीरस हो जाती हैं. यह जीवन के हर क्षेत्र में लागू है. ऐसे में क्या उपाय हैं जिससे हम इस नीरसता से बच सकें, दिन प्रति-दिन प्रफुल्लित होकर कार्य कर सकें तथा हमारे आस पास रहने वाले लोगों के साथ सौहार्दपूर्ण तथा उत्पादक वातावरण निर्मित कर सकें.

1. कृतज्ञता का भाव

जीवन में आपने कई महत्वपूर्ण पड़ावों को पार कर वर्तमान उपलब्धियां, ख्याति पाई है. ऐसे में स्वंय के प्रति कृतज्ञता का भाव रखना आवश्यक है. हमारे जीवन में कई लोगों की शुभेच्छा तथा आशीर्वाद के परिणामस्वरूप हम वर्तमान परिस्थितियों में है. यह सदैव ध्यान रखे हैं कि परिस्थितियां इससे भी बुरी हो सकती हैं. जीवन एक यात्रा है. ऐसे में हमें इस राह के सुंदर रास्तों एवं दृश्यों से लाभान्वित होना है. न कि खराब रोड से परेशान होना है. हमारे विचार हमारी ऊर्जा हैं. यह हमें सुनिश्चित करना कि हम हमारी ऊर्जा कहां व्यय करना चाहते हैं.

महात्मा गांधी ने कहा था, ''कृतज्ञता सबसे बड़ी नैतिकता है.'' जब हम अपने जीवन में कृतज्ञ रहते हैं, तो हमारे अंदर सकारात्मकता और आनंद का संचार होता है. यह हमें उपलब्धियों का मूल्य समझने में सहायक होती है और हमें अहंकार से दूर रखती है.

प्रेरणादायक उदाहरण:

- नेल्सन मंडेला ने वर्षों तक अन्याय और भेदभाव का सामना किया, लेकिन उन्होंने अपने संघर्ष को सफलता का पथ बना लिया और पूरे विश्व को कृतज्ञता और सहिष्णुता का पाठ पढ़ाया.
- हेलन केलर, जिन्होंने अपने जीवन में अपार कठिनाइयों का सामना किया, लेकिन उनकी कृतज्ञता और सकारात्मक दृष्टिकोण ने उन्हें विश्व प्रसिद्ध प्रेरणास्त्रोत बना दिया.

2. अनुशासित रहना -

अनुशासन हमारे जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो सफलता और सुखद जीवन की ओर अग्रसर करता है. यह वह गुण है जो हमें अपने कार्यों को समय पर और सही तरीके से करने की प्रेरणा देता है. अनुशासन न केवल व्यक्तिगत विकास में सहायक होता है, बल्कि यह समाज और राष्ट्र के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. अनुशासन ही वह मार्ग है जो हमें लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता करता है. जो व्यक्ति अनुशासित रहता है, वह अपने समय का सदुपयोग करता है और अपने कार्यों को निर्धारित समय में पूरा कर पाता है. चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, खेल हो, व्यवसाय हो या कोई अन्य क्षेत्र, अनुशासन सफलता का आधार होता है. अनुशासन व्यक्ति को आत्म-नियंत्रण सिखाता है. यह हमें बुरी आदतों से दूर रखता है और अच्छी आदतों को अपनाने के लिए प्रेरित करता है. अनुशासित व्यक्ति अपने जीवन में संतुलन बनाए रखता है और आत्म-विकास की ओर अग्रसर होता है.

अनुशासित व्यक्ति अपने जीवन में संतुलन बनाए रखता है और आत्म-विकास की ओर अग्रसर होता है. इसका पालन करने के लिए:

- एक निश्चित दिनचर्या बनाना आवश्यक है.
- कार्यों को प्राथमिकता देना सीखें.
- आत्म-नियंत्रण का अभ्यास करें.
- लक्ष्य निर्धारित करें और उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध रहें.

स्वामी विवेकानंद ने कहा था, ''उठो, जागो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए.'' यह कथन अनुशासन का सही उदाहरण प्रस्तुत करता है. अनुशासित व्यक्ति अपने जीवन में संतुलन बनाए रखता है और आत्म-विकास की ओर अग्रसर होता है.

प्रेरणादायक उदाहरण:

➤ सचिन तेंदुलकर का जीवन अनुशासन का उत्कृष्ट उदाहरण है. उनके निरंतर अभ्यास और अनुशासन ने उन्हें क्रिकेट के भगवान की उपाधि दिलाई.

➤ टेस्ला और स्पेसएक्स के संस्थापक एलॉन मस्क अपनी अनुशासनप्रियता और कठोर परिश्रम के कारण दुनिया के सबसे प्रभावशाली उद्यमियों में से एक बने.

3. समय का सदुपयोग -

समय सबसे मूल्यवान संपत्ति है, और हम सभी के पास समान समय है, परंतु कुछ लोग समय का सदुपयोग करके निरंतर आगे बढ़ते चले जाते हैं और कुछ लोग समय का दुरूपयोग करके निरंतर अपना विनाश करते चले जाते हैं. यह आपको सुनिश्चित करना होगा कि आप अपना बहुमूल्य समय कहां प्रदत्त करना चाहते हैं. जीवन में समय प्रतिपल बीतता जा रहा है. यह हम सभी जीवन की भाग-दौड़ में व्यस्त होने पर महसूस करते हैं. जहां हम स्वयं के लिए भी समय नहीं निकाल पाते हैं. समय निरंतर गतिशील है, जो समयानुसार अपने आप को विकसित नहीं करता वह अक्सर आने वाले अवसरों से लाभान्वित नहीं हो पाते. ऐसे में अनुशासन हमें इसका सही उपयोग करना सिखाता है. एक अनुशासित व्यक्ति अपने समय का सदुपयोग करता है और आलस्य से बचता है. इससे वह अपने कार्यों को समय पर पूरा कर पाता है और जीवन में आगे बढ़ता है.

समय का सदुपयोग करने के लिए:

- एक प्रभावी कार्य योजना बनाएँ.
- अनावश्यक कार्यों से बचें.
- समय प्रबंधन तकनीकों को अपनाएँ.
- डिजिटल व्याकुलता (डिजिटल डिस्ट्रैक्शन) से बचें.
- स्वयं के लिए भी समय निकालें.

पूर्व राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था, ''यदि आप सूरज की तरह चमकना चाहते हैं, तो पहले सूरज की तरह जलना सीखें.'' समय का सदुपयोग करने के लिए हमें अपने लक्ष्यों को प्राथमिकता देनी होगी और अनावश्यक कार्यों से बचना होगा.

प्रेरणादायक उदाहरण:

➤ बिल गेट्स ने अपने समय का सदुपयोग कर माइक्रोसॉफ्ट जैसी विश्वस्तरीय कंपनी बनाई.

➤ आइज़ैक न्यूटन ने अपने एकांत समय का उपयोग गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज में किया.

4. स्वयं के स्वास्थ्य का ध्यान रखें -

सबसे महत्वपूर्ण हमारे जीवन में हमारा स्वास्थ्य है, परंतु हम सबसे कम ध्यान हमारे ही स्वास्थ्य के प्रति देते हैं. हम दूसरों के स्वास्थ्य का ध्यान अवश्य रखते हैं. पर जब स्वयं के स्वास्थ्य की बात आती है तब हम यथोचित ध्यान नहीं देते. यह हमें बदलना होगा. स्वयं के स्वास्थ्य का समुचित ध्यान रखना हमारी ही जिम्मेदारी है. यदि हम स्वस्थ होते हैं तो हमारे कार्य में उत्पादकता रहती है. हमारे स्वास्थ्य का ध्यान रखने के लिए यह हमें सुनिश्चित करना होगा कि हम संतुलित आहार ले रहे हों, नियमित नींद ले रहे हो. जिसका समय अवश्य सुनिश्चित हो. हमारी वर्तमान कार्यशैली ऐसी है, कि हम अधिकांश समय बैठे रहते हैं ऐसे में हमें समय-समय पर शारिरिक व्यायाम भी करते रहना चाहिए. इससे संतुलित आहार हमारे शरीर में आवश्यक पोषण तत्वों की उचित पूर्ति करता रहेगा. साथ ही साथ अनावश्यक तनावों को दूर रखना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है. क्योंकि नकारात्मक विचार हमारी ऊर्जा का दुरूपयोग कर हमें आवश्यकता से अधिक थका देते हैं. इससे उलट सकारात्मक विचार हमें अधिक ऊर्जा के साथ कार्य करने के लिए प्रेरित करते हैं. सदैव सर्वप्रथम स्वयं के स्वास्थ्य का ध्यान रखें.

स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए:

- संतुलित आहार का सेवन करें.
- नियमित रूप से व्यायाम करें.
- मानसिक स्वास्थ्य का ध्यान रखें.
- पर्याप्त नींद लें.
- अनावश्यक तनावों से दूर रहें.

ग्रीक दार्शनिक सुकरात ने कहा था, ''स्वास्थ्य ही असली धन है, सोने और चांदी से अधिक मूल्यवान.'' यदि हम स्वस्थ होते हैं तो हमारे कार्य में उत्पादकता बनी रहती है.

प्रेरणादायक उदाहरण:

➤ महात्मा गांधी ने योग और प्राकृतिक जीवनशैली को अपनाकर खुद को स्वस्थ रखा और दूसरों को भी प्रेरित किया.

➤ विराट कोहली ने अपनी फिटनेस पर ध्यान देकर खेल में क्रांतिकारी परिवर्तन किया.

5. ज्ञानवर्धन पर कार्य करें -

हम आज एक प्रतिस्पर्धात्मक दौर में हैं, जिसमें स्वयं को नित-नयी जानकारियों से अद्यतन रखना अत्यंत महत्वपूर्ण है. ऐसा माना जाता है कि मानव मस्तिष्क में अपार क्षमता तथा असीमित संभावनाएं हैं. जिस प्रकार भोजन हमारे शरीर की आवश्यकताओं को पूर्ण करता है. उसी प्रकार हमारे मस्तिष्क के लिए जानकारियां आवश्यक हैं. इसका सबसे आसान तरीका है - किताबें पढ़ें. किताबों में मनुष्य अपने विचारों को एकत्रित करके बड़े ही सुंदर ढंग से प्रस्तुत करते हैं. यह उसके अपने जीवन के सार को संग्रह किया रहता है. सारे महान व्यक्तित्वों ने सदैव पढ़ने पर अधिक जोर दिया है. यह आपको स्वयं के साथ साथ विश्व को जानने का अवसर प्रदान करता है. विश्व में वर्तमान में क्या चल रहा है, उस अनुसार स्वयं का ज्ञानवर्धन अति आवश्यक है. यह आपको शांति के साथ साथ आत्म बल में वृद्धि करेगा. यह आपके कार्यालयीन वातावरण में प्रदर्शित होगा. आप स्वयं अच्छा महसूस करेंगें.

ज्ञानवर्धन के लिए:

- किताबें पढ़ने की आदत डालें.
- नए कौशल सीखें.
- डिजिटल माध्यमों से ज्ञान अर्जित करें.
- विशेषज्ञों और प्रेरणादायक व्यक्तियों के अनुभवों से सीखें.
- स्वयं को निरंतर विकसित करें.

अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था, ''सीखना कभी बंद मत करो, क्योंकि जीवन कभी सिखाना बंद नहीं करता.'' हमें निरंतर पढ़ने, सीखने और खुद को विकसित करने की आदत डालनी चाहिए.

प्रेरणादायक उदाहरण:

➤ अब्राहम लिंकन ने अपने ज्ञान के बल पर अमेरिका के सबसे प्रभावशाली राष्ट्रपति के रूप में पहचान बनाई.

➤ डॉ. भीमराव अंबेडकर ने ज्ञान के माध्यम से समाज सुधार का कार्य किया.

6. ध्यान के लिए समय निकालें -

हम सभी के जीवन में सदैव समय की कमी रहती है. परंतु हम सभी यह जानते हैं कि ध्यान हमारे लिए कितना महत्वपूर्ण है. हाल ही में हमारे वर्तमान माननीय उप-राष्ट्रपति महोदय श्री जगदीप धनखड़ जी के द्वारा ध्यान के विषय में ग्लोबल कॉन्फ्रेंस ऑफ मेडिटेशन लीडर्स (GCML) 2025 का उद्घाटन किया गया. ग्लोबल कॉन्फ्रेंस ऑफ मेडिटेशन लीडर्स (GCML) 2025 एक ऐसा आयोजन है, जहां दुनिया भर के ध्यान विशेषज्ञ, आध्यात्मिक गुरु, वैज्ञानिक, नीति-निर्माता और वेलनेस विशेषज्ञ एक साथ आएंगे. इस सम्मेलन का उद्देश्य यह है कि ध्यान (मेडिटेशन) कैसे व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है. यह इस बात को प्रमाणित करता है कि ध्यान का हमारे जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है. हम सभी को अपने वयस्त जीवन से समय निकाल कर ध्यान कर स्वयं को समय भेंट करना चाहिए.

ध्यान के लाभ:

- मानसिक शांति प्राप्त होती है.
- ध्यान से मनोबल एवं आत्म-विश्वास बढ़ता है.
- यह हमें तनाव मुक्त करता है.
- ध्यान से निर्णय लेने की क्षमता में सुधार होता है.
- यह हमारी कार्यक्षमता को बढ़ाने में सहायक होता है.

प्रेरणादायक उदाहरण:

➤ स्टीव जॉब्स ध्यान का अभ्यास कर अपनी रचनात्मकता को बढ़ाते थे.

➤ जापान के समुराई योद्धा ध्यान के माध्यम से अपनी मानसिक शक्ति को बढ़ाते थे.

निष्कर्ष

अंत में सारी बातों को पुन: सारांश में एकत्रित करते हुए बताना चाहूंगा कि यह कोई नयी बातें नहीं है जो हम नहीं जानते अपितु ये वे बातें हैं जो हम सब जानते हैं. बस देरी केवल स्वयं के जीवन पर लागू करने की है. आपके जीवन में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति कौन है- इसका जबाव है आप स्वयं. तो ऐसे में स्वयं की प्रगति के लिए आप (स्वयं) को ही कष्ट भोगना होगा तथा इसके दीर्घकालीन फल भी आपको ही मिलेंगें. शुरूआत अपने प्रति कृतज्ञ होने से करें. अनुशासन जीवन को सफल, संतुलित और सुखमय बनाता है. अनुशासन से आप अपने समय का भी सदुपयोग करेंगें. तथा समय निकाल कर स्वयं के स्वास्थ्य तथा ज्ञानवर्धन पर कार्य करें. तनावमुक्त रहने के लिए समय-समय पर ध्यान करें. इन सब के बाबजूद जीवन में समस्याएं हो सकती हैं. ऐसे में गौतम बुद्ध की एक बात सदैव याद रखें. ''जीवन एक संघर्ष है.'' परंतु इसे हम मिलजुल कर खुशी-खुशी गुजार सकते हैं. यह निर्भर करता है कि हम क्या चुनते हैं. जीवन एक रास्ता के जैसा है, हम सभी एक गंत्वय से दूसरे गंत्वय जा रहे हैं. ऐसे में कई मनमोहक दृश्य हमें प्रसन्नचित्त भी करते हैं तथा खराब रास्ते मन को अप्रसन्न भी करते हैं. यह हमारे ऊपर निर्भर करता है कि हम किस स्मृति को अपने जहन में संजो कर रखना चाहते हैं.

प्रथमेश जाधव
सहायक प्रबंधक (सू.प्रौ.)
डीआईटी, बेलापुर

हमारे बैंक का थीम सांग

सेन्ट्रल गान

सेन्ट्रल बैंक, सेन्ट्रल बैंक, सेन्ट्रल बैंक हमारा

स्वदेशी बैंक, सबका बैंक, जन – जन का ये प्यारा

सेन्ट्रल बैंक, सेन्ट्रल बैंक, सेन्ट्रल बैंक हमारा... सेन्ट्रल बैंक, सेन्ट्रल बैंक, सेन्ट्रल बैंक हमारा...

सेन्ट्रल बैंक का है ये सपना, भारत सबसे आगे करना

ऐसी बैंकिंग हमें है करना, विकसित होगा भारत अपना

हो सर्वाधिक योगदान हमारा... सेन्ट्रल बैंक, सेन्ट्रल बैंक, सेन्ट्रल बैंक हमारा...

सेन्ट्रल बैंक का ये अभियान, महिला पाये सम्मान

महिला शाखा, महिला प्रधान, महिला ग्राहक हमारी शान

स्त्री शक्ति को वंदन हमारा... सेन्ट्रल बैंक, सेन्ट्रल बैंक, सेन्ट्रल बैंक हमारा...

जेन नेक्स्ट का सेन्ट्रल बैंक, डिजिटल सारा सेन्ट्रल बैंक

पॉकेट में भी सेन्ट्रल बैंक, कभी कहीं भी सेन्ट्रल बैंक

हर पल सेवा कर्तव्य हमारा... सेन्ट्रल बैंक, सेन्ट्रल बैंक, सेन्ट्रल बैंक हमारा...

सेन्ट्रल बैंक ऑफ़ इंडिया
Central Bank of India
1911 से आपके लिए ''केंद्रित'' "CENTRAL" TO YOU SINCE 1911

Sir Sorabji Pochkhanawala
Founder

On the Occasion of
114th
FOUNDATION DAY
21ST DECEMBER 2024
कर्तव्येन कर्ताभि रक्ष्यते

हम सभी हितधारकों का उनके
सतत सहयोग हेतु धन्यवाद करते है

We thank all our Stakeholders
for their Continued Support

एक अच्छे बैंक से महान बैंक की ओर अग्रसर
Transforming from a Good Bank to a Great Bank

www.centralbankofindia.co.in | Follow us on Centralbankofindia | Toll Free No.:1800-30-30